वर्षः 01
अंकः 01
पेज-16
मूल्यः 5 रुपये
ग्रेटर नोएडा
15 से 28 फरवरी 2022

मिथिला आवाज

निर्भीक आ निष्पक्ष आवाज
पाक्षिक

 mithilamilan9@gmail.com

www.mithilaawaz.com
RNI No.- BIHMAI/2013/48732

ठीके ग ओलनि...

मेरी आवाज ही पहचान है...



लता मंगेशकर
(1929-2022)

संपादकीय



अहांक आवाज युग-युग धरि गुंजैत रहत!



डॉ.चन्द्रमोहन झा

ई विश्वास करब बड्ड कठिन भ' रहल अछि जे देश के सबसँ सुरीला आवाज आई हमेशा के लेल खामोश भ' गेलखिन। भारतरत्न लता मंगेशकर हमर सांगीतिक, सांस्कृतिक आ राष्ट्रीय अस्मिताक आवाज अछि। आवाज जे सदी मे कहियो एक्के बेर गुंजैत अछि। आवाज जेना सन्नाटा के चीरैत कोनो रूहानी दस्तक होय। अपन देश आ दुनिया मे एहेन लोगक संख्या करोड़ों मे होयत जिनका लेल लता जीक गाबल हुनक अपन गीत जकां भ' गेल होय। अपन गीत आ सुर मे जीवनक व्यापक संदर्भ ल' क' लता मंगेशकर करोड़ों लोगक मन मे ललित मौजूदगी जकां उपस्थित छथि हमेशाक लेल। ओ सदखनि किंवदंती अर्थात लीजेंड बनि हमर सभक दिल पर राज करथिन।

हुनक मर्मस्पर्शी आवाज भारतक शान अछि जाहि मे युगीन आ अस्तित्वगत बोध के संग जीवनक सभटा संदर्भ सेहो भेटैत अछि। हमरा एहेन बहुत गोटा मिलल अछि जे अपन बेख्याली में , अपन निपट एकांत मे वा अपन स्वंय के खोज के क्षण में लता जी कँ सहसा जरूर गा लैत छथि। कतेक एहनो लोग छथिन जिनका लता जी कँ गाबैत काल हुनका सँ अपन कोनो भिन्नताक अहसास नहि होइत अछि। प्रत्येक लोगक पास किछु न किछु राग होइत अछि, अपन स्मरण होइत अछि, तँ सभ लोगक पास लता जीक गायल गीत सेहो रहैत अछि। ' तुम आ गए हो , नूर आ गया है ' , ' रहे न रहे हम महका करेंगे ' । जेना रातक धमनी मे निखालिस प्रेम बहि रहल होय आ जेना लता जीक आवाज मे लिखल जा रहल होइ कोनो मौलिक कविता। लता जीक आवाज ककरो द्वारा लिखल गीत के जकरा ओ गाबने छथिन ओकरा एकटा सुंदर वस्त्र तँ पहिनाये दैत अछि संगहि समानांतर सुर केर स्वाधीनता के एकटा आउर गीत रचि दैत अछि। लता जीक आवाज मे गायल गीत ओर बोल कँ आउर गरिमामय बना दैत अछि। लता जीक आवाज ओकर अर्थ कँ आउर विस्तार प्रदान करैत अछि। अपने सबकें इहो ज्ञात होबाक चाही जे साल 1964 मे लता दीदी मैथिली मे विद्यापति फिल्म लेल गीत ह्यसुनु सुनु रसिया' गेने छथिन जे हमर सभक धरोहर थिक। 1964 में लता दीदी पहिल बेर मलय मुखर्जीक संग फिल्म विद्यापति के लिए मैथिली मे गीत गने रहथिन। विद्यापतिक रचना 'सुनु सुनु रसिया' गीत ओहि जमाना मे खूब लोकप्रिय भेल छल आ आइयो ई गीत मिथिला मे खूब सुनल जायत अछि।

पिछला सदीक चारिम दशक मे लता जीक पार्श्वगायन केर दुनिया मे प्रवेश क भारतीय सिनेमाक सबसँ पैध युगांतरकारी घटनाक रुप मे साबित भेलिन। ई कतेक स्वाभाविक आ संजोग वला घटना थिक जे लता जीक पार्थिव देह के विसर्जन देवी सरस्वतीक प्रतिमा के विसर्जन के दिने भेल। श्रद्धांजलि देश की इस महानतम गायिका को। नाम गुम जाएगा... चेहरा ये बदल जाएगा... मेरी आवाज ही पहचान है, गर याद करे... । मिथिला आवाज केर विमोचन तय छल मुदा की करल जाय लता जीक देहावसान त एकटा सन्निपात जकां गिरल। मिथिला आवाज अखबारक परिवार हमेशा अहां कँ याद करत। आई बड्ड भारी मन सँ हम मिथिला आवाज पाक्षिक अखबारक पहिल अंक समस्त अपन प्रिय पाठक, लेखक आ विशाल मैथिल समाज के समक्ष प्रस्तुत क' रहल छी।

लता मंगेशकर होयबाक मतलब

लताजी हमरा सभ सन माटिक पुतला केँ सांस लैत मनुक्ख मे बदलि देलखिन



प्रियदर्शन

सितारा रोज टूटैत अछि, आई आसमान टूटल अछि- किछु दिन पहिने ई वाक्य मित्र व्योमेश शुक्ल नृत्य गुरु बिरजू महाराज के देहावसान के बाद लिखने रहथिन। लेकिन लता मंगेशकरक निधनक व्याख्या के लेल शायद एहि सँ सही कोनो वाक्य सोचनाई मुश्किल अछि। वाकई संगीत केर, सुर केर आसमान आई टूटि गेल। सत्तर साल सँ ई आवाज एकटा पर्यावरण जकां हमरा ऊपर छायल छल। लता जी हम सभ लोग जे माटिक पुतला छी ओकरा सांस लैत मुनक्ख मे बदलि देलखिन। एहि आवाज के संगत मे हम पहचान लैत छलहुँ जे हमरा लग एकटा दिल अछि जे धड़कैत अछि, जे प्रेम करैत अछि, जे मायूस होइत अछि, रिश्ता निभावैत अछि, रिश्ताक लेल जान दैत अछि, उदास भ' जाइत अछि, उदासी स' उबरैत अछि, अपन देश के जानैत अछि, अपन दुनिया के पहचानैत अछि आ स्वंय के ओहि ओहि आवाज मे बहबाक लेल छोड़ि दैत अछि।

बस कल्पना करूं कि जँ लता मंगेशकर नहि होति त' की होतियेक? बेशक, हिंदी फिल्म केर दुनिया मे बहुत रास आवाज छल, मुदा लता मंगेशकर वला दैवीय संपूर्णता ककरो मे नहि छल। ओ अगर नहि रहती तँ 'महल' केर 'आएगा, आएगा, आएगा' वाला ओ अबूझ पुकार केना संभव भ' सकैत छल जाहि मे समय सेहो सांस लैत मालूम होयत छै? जँ ओ नहि रहति तँ 'मुगले आजम' मे शहंशाह अकबरक रोल करैत पृथ्वीराज कपूरक जरैत आंख के सोंझा के बगाबत क' ओ शमा जला सकति छलीह कि प्यार किया तो डरना क्या, आ के एहि अंदाज मे गाबि सकैत छलींह कि 'परदा नहीं जब कोई खुदा से, बंदों से परदा करना क्या?' जँ लताजी अही दुनिया मे नहि जन्म लेने रहथिन तँ 'पाकीजा' मे मीना कुमारीक दर्द केँ ओ मीठगर टीस के द' सकैत छलीन्ह जकरा संग चलैत-चलैत एकटा पूरा उम्र निकलि जायत अछि? 'द गाइड' केर ओ रोजी केना साकार भ' सकैत छल जे 'कांटों में खींच कर ये आंचल, तोड़ के बंधन बांधी पायल' गाबि सकैत छलीन्ह आ कहथिन जे कि आज फिर जीने की तमन्ना है आ इस गुस्ताखी पर भी दुनिया निसार होती?

जँ लता जी अही दुनिया मे नहि जन्म लेने रहथिन तँ हमर मधुबाला, मीनाकुमारी, वहीदा रहमान, वैजयंतीमाला, नूतन, नरगिस, सायरा बानो, शर्मिला टैगोर, जया भादुड़ी, रेखा, हेमा मालिनी अधूरे रहि जतियैन। ओ नहि रहतियैथ तँ हमर मुकेश, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, तलत महमूद, हेमंत कुमार आ महेंद्र कपूर कतेक असगर बुझा पड़तियैन, सुरैया, गीता दत्त, शमशाद बेगम, आशा भोंसले आ सुमन कल्याणपुरे धरि कतेक एकभगाह बुझाय पड़तियैन?

आ लता मंगेशकर नहि रहतियेथ तँ हिन्दुस्तानक लड़की केहैन हैतियेक? एहि आवाज सँ हिंदुस्तान के लड़की सभ गढल गेल अछि। जाहि दौर मे लड़की सभ घर स' नहि निकलि सकैत छलींह, बच्चे मे बियाहक बंधन मे बांधि देल जायत छल, उम्र भरि पतिक इच्छा पूर करबा मे गुजारि दैत छलिन्ह आ बुढ़ापा मे अपन बीमारीक उपेक्षा करैत एक दिन स्वंय गुजर जायत छलिन्ह। ओहि दौर मे ओकरा सभ कें लता मंगेशकरक गीत सभ जीबाक बहाना दैत छल, जीबाक लेल तसल्ली आ राहत भैटैत छल आ जीबाक सलीका सेहो भेटैत छल। एहि गीतक सहारे ओ सभटा चुलबुली बहिन बनलिन्ह, सुन्नर आ प्यार सँ भरल भाभी बनलिन्ह, ममतामयी मां बनलखिन्ह, आज्ञाकारी बेटी आ बहु बनलखिन्ह। एहि गीत सभक बीच ओ शादी आ होली-दिवालीक त्योहार के सुख ललखिन्ह, आ एहि गीतक छाया मे ओ प्रेम करब, विद्रोह करब आ घर सँ भागब सेहो सिखलखिन्ह। जँ ई हिन्दी सिनेमा नहि रहतियैक आ जँ लता मंगेशकर नहि रहतियैथ तँ हमर स्त्रीक दुनिया ओतेक जीवंत आ बहुरंगी नहि होतियेक जतेक आई अछि। लता बस लता नहि छलिन्ह, ओ एकटा विशाल छतनार वृक्ष रहथिन जकर साया मे हिन्दी फिल्मक संगीत केर सुनहरा दौर परवान चढलै। कतेक असंभव लगैत धुन सिर्फ.हुनके वजह स संभव भ सकल। ओ बहुत हल्का सुर मे सेहो उठान भरि दैत रहथिन आ बहुत ऊंचा सुरों के सेहो अपन पकड़ मे बना क' राखैत छलिन। मुश्किल स' मुश्किल गीत हुनक कंठ मे सहज पुकार भ जायत छल। ई शास्त्रीयता के संधान करैत आ लोक के रस लैत आवाज छल। ई एकटा वजह सेहो छल जे हुनक गीत हमरा गीत नहि अपन जीवन हिस्सा सन लागैत अछि। आ कतैक-कतैक पीढ़ी के लता बनाबैत आ बिगाड़ैत रहलखिन? फिल्मी गीतक दुनिया मे हुनक प्रवेश बहुत जिंदगीक बहुत मुश्किल दौर मे भेल छल। बचपन मे हुनक नाम लता नहि भ क हेमा छल। संगीतकार पिता दीनानाथ मंगेशकर केर असमय निधनक पश्चात 14 सालक पैसा कमेबाक लेल हुनका माइक के सोझां ठाढि होबय पड़लनि। हुनका अपना सँ छोट तन-तीन टा बहिन मीना, आशा आ उषा मंगेशकर के अलावे सबसँ छोट भाई हृदयनाथ मंगेशकर के ख्याल सेहो राखै पड़ैत छल।

ई चालीसक दशक छल। हिंदी सिनेमा तखन बोलब आ गायब सीखनाई शुरूये कयने छल। ओकर बाद तँ लता जी लगातार गाबैत-गाबैत चलि गेलखिन। हुनक आवाज मे सेहो निखार आबैत गेल। शुरूआती दशक मे ओ एकटा बहुत महीन आ स्त्रैण आवाज वला गायिका छलखिन जकरा पर दोसरक प्रभाव सेहो छल। लेकिन धीरे-धीरे ओ स्वतंत्र आ खिलल-खिलल आवाज मे बदलि गेलखिन। पचास आ साठ केर दशक मे हुनक गायल गीत एहि आवाज केर सबसँ खूबसूरत चढ़ान के बीच बनलै। मोहब्बत, बगावत, आजादी, देशभक्ति सभटा एहि आवाज में साकार होयत गेल। एहि दौर मे पंडित प्रदीपक लिखल गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगो' लता मंगेशकर के आवाज में सुन केँ पंडित नेहरूक आंखि सँ आंसू आबैक बात कहल जायत अछि। एहि दौर मे हुनक आवाजक जादू सँ सजल 'पाकीजा'क एहेन चर्चा होयत अछि जे बांग्लादेश युद्ध हारलाक शिमला समझौताक लेल भारत आयल जुलफि कार अली भुट्टो के संग आयल हुनक युवा बेटी बेटी बेनजीर एहि फिल्म देखबाक इच्छा जतौलेनि छलखिन। आ हुनका लेल फिल्म पाकीजाक स्पेशल शो राखल गेल छल। जँ ई आवाज नहि रहतियैथ तँ ओ फिल्मक जादू बहुत हद धरि खत्म भ' जतियैक। सत्तर के दशक आबैत-आबैत ई आवाज किछु आउर प्रौढ़, परिपक्व, गहींर आ परतदार होइत गेल।

'आंधी', 'मौसम' आ 'अभिमान' सन फिल्म मे गायल हुनक गीत एकटा अलगे आयाम रचैट-गढैत अछि। 'खामोशी'क गीत 'हमने देखी है उन आंखों की खुशबू' के शब्द के जेना लता एकटा नव ऊंचाई द' दै छथिन। जखन ओ 'मुकद्दर का सिकंदर' के लेल मुजरा गाबैत छथिन- 'सलामे इश्क मेरी जान जरा कबूल कर ले' तं आवाज मे एकटा शोखी आ कमनीयता चलि आबैत छनि। बेशक, बहुत रास संगीत मर्मज्ञ एहि मुजरा कें पाकीजा अथवा दोसर फिल्म में लता द्वारा गायल गेल मुजराक टक्कर के नहि मानैत होता, लेकिन एहि गीत के सेहो अपन जादू अछि। ई सच अछि जे लता मंगेशकर के एहि विशाल सफर मे बहुत रास एहेन पड़ाव सेहो आयल जाहि मे हुनका पर सवाल उठायल गेल। कतेक लोक केँ माननाइ अछि जे लता सोसर गायिकाक रास्ता रोकलखिन। लेकिन लता मंगेशकर एतेक विराट प्रतिभा के छलखिन जे हुनका ककरो रास्ता रोकबाक कोनो जरुरते नहि छल। कतेक लोग के मानबाक अछि जे आशा भोसले मे हुनका सँ बेसी विविधता छै। निस्संदेह 'इजाजत' और 'उमराव जान' सन फिल्मों मे आशा भोसले जे गजल आ नज्म गेलखिन ओ अपना तरहें अप्रतिम छै, लेकिन एहि सँ लता मंगेशकर के श्रेष्ठता मे मिसियो भरि खरोंच नहि अबैत अछि। बेशक, हुनक राजनीतिक रुझान क ल कतेक लोग निराश आ क्षुब्ध होयत छथि, लेकिन एकटा कलाकारक मूल्यांकन हम हुनक राजनीतिक समझ सँ नहि क सकैत छियै। लता मंगेशकरक गीत लता मंगेशकरक विचार सँ काफी पैघ अछि। कतेक तरहक भाव केर भारत जे हमर समक्ष अछि ओकर सभटा अंतर्विरोधक बावजूद कतेक तरहक पहिचान वला जे सांस्कृतिक सामंजस्य हम बनने छिये ओहि मे हिन्दी सिनेमाक एकटा अहम भूमिका अछि आ ओकर सबसँ कामयाब पार्श्वगायिकाक तौर पर लता मंगेशकर के सेहो। आ एहि मे कोनो शक नहि अछि जे गायनक संसार मे दोसर लता मंगेशकर नहि होयत। मुदा हुनक गीत सदा चिर-अमर रहत। ओ तो गयने छथिम, 'रहें न रहें हम, महका करेंगे, बन के कली, बन के सबा, बागे वफा में।'

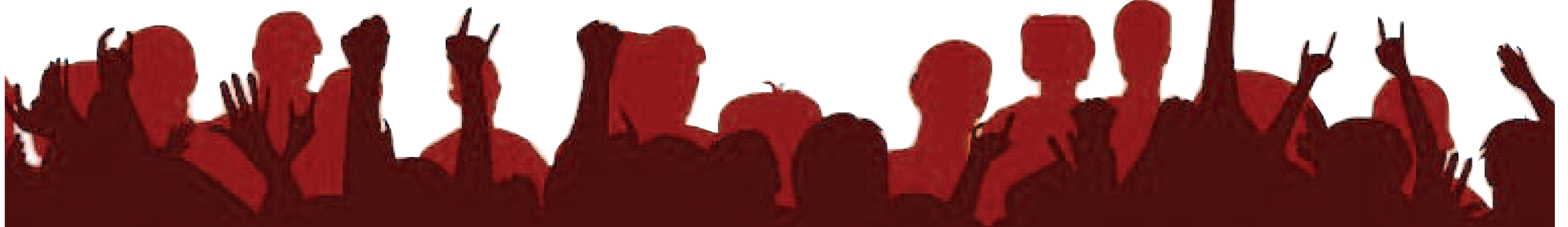
साभार: सत्य हिन्दी. कॉम

(लेखक एनडीटीवी मे सीनियर जर्नलिस्ट छथि)









निर्मला जिज्जीक डिजिटल बजट

1 अप्रैल 2022 केँ भारत सरकार लॉन्च करत अपन डिजिटल करेंसी


सतीश वर्मा

मोन अछि 8 नवंबर 2016, कतेक पैघ ठनका गिरल छल देश पर, हमर अहांक जेब पर, हमर अहांक घर मे पेट काटिक' बचत करल राखल छोट-छोट राशिक संचित धन पर आ सौंसे देश केर छोट-छोट रोजगार करैत दुकानदार पर, ठेला-रेहड़ी चलबय वला पर। रातिये राति जखन देश मे नोटबंदी कयल गेल त' एकाएक हमर-अहांक आ सौंसे देशक नोट रद्दी भ' गेल छल। देशक इकोनॉमी पर ई सबसँ पैघ कुठाराघात छल। वाजिब पैसा रहितो हम नहि किछु किन क' खा सकैत रही, न बच्चा के स्कूल फी द' सकैत रही, न बेटीक ब्याह क' सकैत रही आ नहि इलाज क' सकैत रही। दू सँ तीन महीना धरि तँ सौंसे देश लाइन मे लागल छल। भूखल-पियासल। कतेक लोकत' लाइने मे ठाढ़े-ठाढ़ मरि गेल। तहियो एहि देशक बताह शहंशाह आ हुनक मंत्री सभ कें बुद्धि नहि खुललैनि। सुनै छिये आब देश मे डिजिटल करेंसी लागू हेते। नोटबंदी स' मन नहि भरले त' आब करेंसीबंदी करबाक मोन छै सरकार कें। लोकशाही मे देश मे कोनो नहि शासक कें ई अधिकार नहि होइत छै जे अपने मने कोनो तुगलकी फरमान जारी क' दिये। मुदा तहियो सात साल तँ देश मे इहै भ' रहल छै। जे देश के शासक कें अपन आका लाला-साहूकार सँ फरमान मिले छै ओकर तामील तुरंत होई छै। देश मे डिजिटल करेंसी लागू करबाक तामिल सेहो संभवत ओहने कोनो आकाक फरमान हेते।

खैर... आखिर की छियै ई डिजिटल करेंसी। की ई क्रिप्टोकरेंसी जकां हेते। एहेन बहुत रास सवाल अहांक दिमाग मे उमड़ैत-घुमड़ैत हैत। तँ, आबु जाने छियै आखिर की छियै डिजिटल करेंसी। एहि 1 फरवरी कें आम बजट 2022-23मे वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण आधिकारिक तौर पर एलान कैलखिनजे कि देश केर केंद्रीय बैंक आरबीआई अपन डिजिटल करेंसी लाबतै। एकरा सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) के तौर पर जानल जायत।

डिजिटल करेंसीक (CBDC) खास बात

सेंटल बैंक डिजिटल करेंसी अर्थात (उइउढ) एकटा एहेन लीगल टेंडर हेते जकरा हम देख आ छू नहि सकैत छी मुदा ई पूरा तरीका स' आधिकारिक आ वैध रहत। ई आम करेंसी (नोट)जकां लेन-देन मे यूज कयल जा सकैत अछि, मुदा एकरा फिजिकल नहि डिजिटल मोड मे उपयोग कयल जा सकैत अछि। देश मे ट्रांजेक्शन के लेलई डिजिटल करेंसी पूरा तरीका सँ मान्यता प्राप्त रहत आ एकरा डिजिटल वॉलेट में राखल जा सकैत अछि आ ओही सँ पेमेंट, बिल डिपॉजिट, ऑनलाइन शॉपिंग संग तमाम तरहक ट्रांजेक्शन करल जा सकैत अछि। ई नोट के जकां जेब मे त' नहि राखल जा सकैत अछि मुदा एकरा नोट के जगह बदलि सकैत छी। उदाहरण के लेलअहां भारतीय करेंसी नोट द' क' डिजिटल करेंसी एक्सचेंज क' सकैत छी आ डिजिटल करेंसी एक्सचेंज क' नोट ल' सकैत छी। अहां के ते मोने हैत जे केना तीस-चालीस साल पहिने हम सभ गाम मे दु मुठ्ठी धान द' दुकान सँ दु पेली करु तेल खरीदैत रही। सेहाय बार्टर सिस्टम फेर सँ इंडियन इकोनोमी मे लागू भ' रहल अछि। जा हे जमाना।

ई आन वर्चुअल करेंसी आ क्रिप्टो करेंसी सँ केना अलग अछि?

भारतीय रिजर्व बैंकक उइउढ एकटा लीगल टेंडर रहतैजखन कीआन वर्चुअल करेंसी आ क्रिप्टोकरेंसी देश मे लीगल टेंडर नहि थिक। लिहाजा ओ सभ जोखिम वला एसेट थिक। आरबीआईक डिजिटल रुपया बिना जोखिम के देश के हर हिस्सामे ट्रांजेक्शन, खरीदारी, बिल पेमेंट के लेल यूज करल जा सकैत अछि। ई बिटकॉइन, इथेरियम सँ अलग रहतजकर दाम निजी तौर पर संचालित आ घटायल-बढ़ायल जाइत अछि।

कहिया लॉन्च होयत आरबीआईडिजिटल रुपया

रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया वित्त वर्ष 22-23केर शुरूआत यानी 1 अप्रैल 2022सँ एकरा लॉन्च क' सकैत अछि। अखनि धरि भारत सन कतेको पैघ देश अपन आधिकारिक डिजिटल करेंसी लॉन्च नहि करने अछि। भारत ई करय वला पहिल देश बनि जायत। ई करेंसी ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी पर आधारित रहत।

जाहि देशक 65 फीसदी गाम मे बसैत अछि, जत वाई-फाई के नेटवर्क धरि ठीक सँ काज नहि करैत छै, जाहि देशक 60 फीसदी आबादी जकरा लेल डिजिटल शिक्षा आईयो काला अक्षर भैंस बराबर जकां छै ओहि देश मे डिजिटल रुपया, डिजिटल शिक्षा लादब एकटा अश्लील आ क्रूर कृत्य थिक। एहि ठाम हमरा अपन प्रियकवि आ वीडियो ब्लॉगर राजीव ध्यानी जीकचर्चित कविता मोन आबि रहल अछि-

'खाओ डिजिटल, गाओ डिजिटल
देश का बैंड बजाओ डिजिटल
रुपया डिजिटल, बैंक भी डिजिटल
और सेना का टैंक भी डिजिटल
बच्चे पाएं डिजिटल शिक्षा
और फिर मांगे डिजिटल भिक्षा
डिजिटल डॉक्टर, डिजिटल गोली
डिजिटल ईद और डिजिटल होली
डिजिटल घर में डिजिटल बच्चे
घूमें पहन के डिजिटल कच्छे
डिजिटल सड़क पर डिजिटल कार
डिजिटल संसद और सरकार
डिजिटल खेत में करो किसानी
डिजिटल खाद और डिजिटल पानी
डिजिटल दूध और डिजिटल गाय
डिजिटल चीनी, डिजिटल चाय
भरके खाओ डिजिटल रोटी
और फिर कर दो डिजिटल पोटी'.



नहि चाही आमदनी अठन्नी आ खर्चा रुपैया वला अमृतकाल



ग्रीन आ डिजिटल करेंसीक चमक मे मिडिल क्लास आ किसानक खेतक हरियरी बिसरा देल गेल

अमीर कें रिबेट, गरीब कें सब्सिडी आ मिडिल क्लास के भेटल टीवी डिबेट। हम उम्मीद मे छलहुँ। अखिनहुँ छी। उम्मीद कोनो कम सेहो नहि छल। हमरा बजट सँ एक झोला उम्मीद छल। सोचैत छलहुँ एहि मे सँ किछु त' निर्मला सीतारमण केर पेटार मे हमरा सभ लेल किछु होयत। स्टैंडर्ड डिडक्शन 50 हजार स 'एक लाख भ' जतियैक, हाउसिंग लोन के ब्याज पर इनकम टैक्स छूटक लिमिट दु लाख स 'तीन लाख भ' जतियैक, पुरनका वला सिस्टम मे इनकम टैक्स स्लैब बदलि जतियैक। मतलब 2.5 लाख के बदला पांच लाख धरिक आय टैक्स केर दायरा सँ बाहर भ' जतियैक। मेडिकल इंश्योरेंस प्रीमियम पर टैक्स छूटक दायरा कनियेक आर बढि जतियैक। एहने कतेक रास उम्मीद हमरा सन मिडिल क्लास कें छल।

हजार-दु हजार महीनाक लॉलीपॉपे मिल जतियैक त' नौ सालक प्यास बुझि जतियैक। उम्मीद कियैक लेल नहि करिये, ई बताओल जाय। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद कतेक बेर टैक्स पेयर्स कें धन्यवाद द' चुकल छथिन। खास क' इमानदार टैक्स पेयर्स कें। सैलरी वला त' छिपायो नहि सकैत अछि। 200 रुपयाक बाहरी कमाई सेहो डिजिटल इंडिया Form 26-अर मे दर्ज क' लेल जायत अछि। आ हमरा सँ बिना पूछने इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करैत काल अहांक कुल इनकम मे जोड़ि क' नीचा ओहि पर टैक्स दिखा देल जायत अछि। पेमेंट ठामहि करबाक सुविधाक संग। तँ फेर हम सभ सिर्फ धन्यवाद के पात्र छी। उम्मीद नहि राखि सकैत छी। बजट के बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जखन कहलखिन जे टैक्स नहि बढ़ायल गेल सेहा सबसँ पैघ राहत अछि, त' लागल जेना ओ हमर अहांक उम्मीद के डरा क' दबा रहल छथिन।

सांझ के मोदी सरकारक आर्थिक सलाहकार संजीव सान्याल एकटा न्यूज चैनल पर खिझल रहथिन। एंकर सवाल जे पूछि लने रहथिन। इनकम टैक्स घटबाक बहुत उम्मीद छल मुदा ई कियैक नहि भ' सकल। जवाब मे संजीव सान्याल पूछने छलाह जे खर्च कहां कम करैत छी, ई पहिने बता दिये। सभटा खर्चा की पर्सनल इनकम टैक्स पेयर्स के जेब सँ हैते। कम से कम तर्के सँ जिज्ञासा शांत करबाक चाही। हमरा सभ कें डरेबाक की जरुरत छल सरकार के आर्थिक सलाहकार कें? माहौल एहेन बनायल जा रहल अछि जे 9 साल स' इनकम टैक्स मे छूट मिलैत रहल अछि, एकरा ध्यान मे राखु आ अगला साल बढि जायत ऐहेन जनमानस बनि जाय। उम्मीद केर बुनियाद पर त' दुनिया टिकल अछि। आ सरकार त' पिछला दु साल के अंदर संकेत द' दने छल। कॉरपोरेट टैक्स मे युगांतकारी परिवर्तन क' 30 परसेंट स' घटा क' 22 परसेंट करल गेल। आ नवका कंपनी के त' 15 परसेंट। ई छूट 2024 धरि बढेबाक घोषणा वित्त मंत्री एहि बजट मे त' क' देलखिन, तँ एकर बाद त' सैलरी वलाक नंबर आबेके चाही छल। छोट दुकानदार आ कारोबारीक लेल लिए गुड्स एंड सर्विसेज टैक्स (जीएसटी स्लैब्स) अछि। वक्त आ मांग के मुताबिक जीएसटी मे बदलाव होइत रहैत अछि। निर्मला सीतारमण बजट भाषणक दौरान ई सेहो बतने छलिन जे जनवरी मे जीएसटी कलेक्शन 1.4 लाख करोड़क ऐतिहासिक स्तर के छूबि लने अछि। मुदा सैलरी वला त' एक फरवरीक इंतजार करैत अछि, एहि सैलरी क्लास कें ठगना नहि चाही। ईमानदारी के इनामो त' मिल'।

ठीक अछि जे बजट ग्रीन आ डिजिटल छल एहि मे कोनो शक नहि। ताहि कारणे ई बजट नीरस सेहो लागल। इकोनॉमी के गति आ शक्ति देबाक लेल सरकार आउर पैसा झोंकत। केंद्र आ राज्य मिल क' 10 लाख करोड़ रूपए सँ बेसी खर्च करत। संजीव सान्याल कहैत छलाह जे की ई सभ उधार ल' क' करु, एकरा लेल एकमात्र रास्ता टैक्स अछि। बजट के दोसर दिन तमाम जानकार सभक राय मे मोदी सरकार खर्च करु आ विकास करु के नारा दने अछि। आब आंकड़ा देखैत छी। पर्सनल टैक्स पेयर्स सँ सरकार के कतैक भेटैत अछि। दिसंबर धरिक आंकड़ा के मुताबिक सरकार के डायरेक्ट टैक्स कलेक्शन 60 प्रतिशत बढ़ि क' लगभग 9.5 लाख करोड़ भ' गेल अछि। एहि मे पर्सनल टैक्स के हिस्सा 4.3 लाख करोड़ रुपया अछि। आब कनी पहिलुकबा आंकड़ा सँ समझैत छी सैलरी वलाक कतेक योगदान अछि आ की हाल अछि। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी के मुताबिक 2020 मे हमर देश मे 41 करोड़ लोग कें रोजगार भेटल अछि। इनमें से 15 करोड़ खेती-किसानी मे लागल अछि जिनका इनकम टैक्स नहि देबाक जरुरति छै। आब बचल 25.5 करोड़। एहि मे सँ सिर्फ 5.8 करोड़ लोग इनकम टैक्स रिटर्न फाइल कयने छथि। जखन की हमरा-अहां सैलरी वला सँ कतेक ज्यादा त' ऑफिस के बाहर दुकान पर बैठल दुकानवला कमा रहल अछि जतय जा क' हम खर्च करैत छी। वा सरकार चाहैत छथि की हम खर्च करी। जखन की ओ टैक्स नहि द' रहल छथि आ सिर्फ कमा रहल छथि।

-बिजनेस डेस्क

बजट मे की भेटल आ की नहि

- इनकम टैक्स रेट आ स्लैब मे कोनो बदलाव नहि
- स्टैंडर्ड डिडक्शन सेहो पहिनुके लेवल पर स्थिर.
- वर्चुअल डिजिटल परिसंपत्ति के ट्रांसफर सँ होय वला इनकम पर 30 प्रतिशत टैक्स लागत
- केंद्र सरकारक कर्मचारी कँ नेशनल पेंशन योजना मे योगदान देबय पर 14% तक टैक्स राहत मिलैत छै, आ राज्य सरकार के कर्मचारी कें 10 प्रतिशत। एहि मे बदलाव करैत आब राज्य सरकार कें सेहो भी 14% कर राहत देबाक प्रस्ताव
- सरकार दाखिल आईटीआर मे भूल-चूक सुधारबा लेल बसि एक बेर मोहलत देगी, अपडेट रिटर्न 2 साल के भीतर भरल जा सकैत अछि
- नवगठित विनिर्माण कंपनियों के लेल 15 प्रतिशत के रियायती कॉरपोरेट टैक्स के दर रहत
- इनकम पर उपकर वा सेस कें व्यापार खर्च के रूप मे दिखेबाक परमिशन नहि भेटत
- बिना मिश्रण वला ईंधन पर 1 अक्टूबर सँ 2 रुपया लीटर अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लागत



भाइ-बहिन के नृशंस हत्याकांड स' दरभंगा शहर मे आक्रोश

दरभंगाः जमीन विवाद मे जिंदा जला देबक घटना मे झुलसल भाइ आ बहिनक मौत स' दरभंगा शहर मे परिजन संग जनताक आक्रोश चरम पर अछि। आगि मे झुलसल भाइ-बहिनक मौत पीएमसीएच मे इलाजक दौरान भ' गेल। गत मंगलवार के भोरे पिंकी झाक पहिने मौत भेल तकर बाद सांझ मे संजय झाक। एहि घटना मेपिंकी झाक गर्भ मे पलि रहल नवजातक मौत सेहो भ' गेल। एहि नृशंस हत्याकांड से आक्रोशित जनता दरभंगा शहरक सड़क पर आबि विरोध प्रदर्शन कयलनि। बता दी की गत 10 फरवरी के भूमाफिया सभ मृतक के घर पर कब्जा करय



एहि नृशंस हत्या के अंजाम देने छल। घर कें तोड़बाक क्रम मे परिवारक चारिटा सदस्य के जिंदा जलेबाक प्रयास केल गेल छल जेहि मे स' दु गोटेक मौत भ' चुकल अछि।

सुपौल मे इको टूरिज्म के बढावा देब लेल बनत कोसी सफारी

सुपौलः कोसी नदीमे इको टूरिज्म के विकसित करबाक लेल कोसी सफारी बनायल जायत। एहि सफारीक विशेशता रहत जे एहि मे पर्यटक कें अत्याधुनिक बोट पर कोसी नदी मे सवारी करायल जायत। पहिल चरण मे कोसी सफारी बनेबाक लेल वीरपुरक साहेबान स' कोसी महासेतु धरि नदीक इलाका चिन्हित कयल गेल अछि। एहि पर काज शुरू भ' गेल अछि। बता दी की कोसी नदी मे घड़ियाल, डॉल्फिन, के संग कतेक रास मछली आ कछुआ पर्याप्त मात्रा मे अछि। एकर दियारा मे सौकड़ो प्रजात के प्रवासी पक्षी सेहो आबैत छै जाहि मे कतेक पक्षी त दुर्लभ आविलुप्त प्राय प्रजाति के अछि। किछु पक्षी स्थाई रूप स' कोसी बेसिने मे रहैत अछि।

ठेंगहा स' रसियारी पुल धरि कमला पर बनल बांध के होयत उच्चीकरणः संजय झा

दरभंगाः जल संसाधन मंत्री संजय कुमार झा दरभंगाक तारडीह मे कमलाक दहिनका तटबंध के निरीक्षणक बाद एकटा पैघ घोषणा कयलनि। तारडीहक पोखरभिडा मे आयोजित स्वागत समारोह मे घोषणा करैत ओ कहलनि जे कमला बलानक दांया कातक तटबंध के उच्चीकरण आ पक्कीकरण कार्य कें ठेंगहा पुल स' आगां रसियारी पुल धरि (कमलाक दहिनका तटबंध के किमी 64 से किमी 75 के बीच) विस्तार कयल जायत। दहिनका कातक तटबंध केर11 किलोमीटर धरि विस्तार भ' गेलाक बादएकर लाभ तारडीह प्रखंडक ठेंगहा गामआ घनश्यामपुर प्रखंड के जयदेवपट्टी, पड़री, तुमौल, गौढेल, लिट्टी चौक, कुम्हरौल, बुढ़ैब इनायतपुर, बौर



आ रसियारी गाम सहित आसपासक अनेक गामक लोग के भेटत। एहि गामक पैघ आबादी के कमला नदीक बाढ़ सँ सुरक्षा भेटते आ संगहि यातायातक वैकल्पिक मार्ग से उपलब्ध हैत।

सुपौल स' मधुबनीक बीच नवका रेल लाईन बनि क' तैयार, 120 डट केस्पीड सँ चलायल गेल ट्रेन

सुपौलः मधुबनी आ सुपौल के बीच नवनिर्मित स्टेशन निर्मली आ तमुरिया के बीच स्पीड ट्रायल सफल भेल। एकरा तहत तेज गति सद्व एहि रेल लाइन पर ट्रायल ट्रेन दौड़ल रेल इंजनक ट्रायल सफल भेलाक बाद सीआरएस के निरीक्षणक जानकारी दैत रेल अधिकारी नलिन बिहारी कहलाह जे आबे वला समय मे जल्दिये दरभंगा, झंझारपुर, निर्मली होयत हुए फारबिसगंजकरास्ता नवका रेल लाइन पर परिचालन शुरू भ' जायत। सकरी-झंझारपुर-निर्मली रेलखंडक लंबाई 62 किलोमीटर अछि। झंझारपुर-निर्मली रेलखंड मे दीप, तमुरिया, निमुआं, चिकना, घोघरडीहा, परसा आ निर्मली आदि स्टेशन आ हॉल्ट रास्ता मे पड़ैत अछि।

खगड़िया स' दरभंगाके बीच चलत डायरेक्ट ट्रेन, बनत अलौली-कुशेश्वरस्थान नवका रेल लाइन

खगड़ियाः दरभंगा से खगड़िया के बीच बहुत जल्द डायरेक्ट ट्रेन सेवा शुरू होयबाक आस जागल अछि। बतायल जा रहल अछि जे दरभंगाक सकरी–हसनपुर रेल लाइन के खगड़िया–अलौली रेल लाइन स' कुशेश्वर स्थान के बीच जोड़बाक लेल काज शुरू कयल जायत। जँ एहेन भ' जाइत त' गुवाहाटी स' आबै वला ट्रेन के नई दिल्ली धरिजेबाक लेल एकटा आर रेल मार्ग भेट जायत। बता दी की बिहार मे तेजी स' प्रस्तावित रेल योजनाक काज भ' रहल अछि। एहि क्रम मे खगड़िया- कुशेश्वरस्थान रेल परियोजनाक सर्वे सेहो शुरू भ' गेल अछि।

> प्रेम एकटा एहेन फल थिक जे प्रत्येक मौसम मे भैटेत अछि आ सभ गोटे लेल सुलभ रहैत अछि...
> –मदर टेरेसा

बढ़ैत जा रहल अछि हिजाबक विवाद

कर्नाटक के उडुपी मे हिजाब पहिनबाक लेल शुरू भेल विवाद एते बढ़ि गेले की राज्य कैं सभटा स्कूल, कॉलेज तीन दिन के लेल बंद करय पड़ल। विवाद पिछ्ला महीना तखन शुरू भेल जखन उडुपी के एकटा कॉलेज मे छह लड़की कैं अंदर जाय सँ एहि लेल रोकि देल गेल छल की ओ हिजाब पहिरने छलीन। विवाद मे दोसर नया मोड़ तखन आयल जखन कॉलेजक एगो हिजाब पहिरने आयल लड़की कैं किछु लड़का जे सभ भगवा गमछा पहिरने छल कॉलेज मे एंट्री लेबा सँ रोकय लागल आ ओकराँ परेशान करय लागल। एहि घटना के वीडियो जखन सोशल मीडिया पर वायरल भेल तँ सौंसे देश मे एहि पर बहस होमय लागल। मुदा एकर प्रतिकूल असर ई भेल जे ई मामला उडुपी के आसपास के इलाका मे सेहो फैल गेल आ कर्नाटकक कतेक ठाम धार्मिक तनाव बढै लागल। बहरहाल, ध्यान ध्यान देबाक बात ई अछि जे की एकटा शहर के एकटा कॉलेजक छोट छिन मामला जकरा समझदारी सँ सुलझायल जा सकैत छल ओ नहि केवल एक महीना धरि जारी रहल बल्कि पूरा राज्य मे बवालक कारण सेहो बनल।

एहि मामला पर आब नहि सिर्फ हाई कोर्ट सुनवाई क रहल अछि बल्कि राज्य सरकार सेहो नियम-कानूनक हवाला द रहल छै। मुदा किछु समय पहिने धरि ओहि पूरा इलाका मे त की ओहि कॉलेज मे कहियो आई धरि सेहो हिजाब क ल कोनो विवाद नहि भेल छल। अचानक एहेन की भेल जे बीजेपी विधायकक केर अगुआई मे चलय वला ओहि कॉलेज मे मुस्लिम लड़की सभ कैं हिजाब पहिरने सँ रोकय वला नियम कैं अनिवार्य क देल गेल? फेर सवाल इहो छै जे जे छात्रा किछु लड़की आ कॉलेज प्रशासन के बीच छल ओ राजनीतिक रंग केना ल ललक? साफ अछि जे ई विवाद जतेक स्वतःस्फूर्त लगैत अछि ओतेक छहि नहि। परदा के पांछा एहि मे राजनीति अहम भूमिका निभा रहल अछि। एहि इलाका मे बीजेपी आ पॉप्युलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) केर राजनीतिक शाखा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) के बीच चलय वला रस्साकशिये एहि विवाद के मूल मे काज क रहल अछि। हिजाब के समर्थन आ विरोध मे प्रदर्शन करैत लड़का लड़की कैं एसडीपीआई केर स्टूडेंट विंग सीएफआई आ बीजेपी केरस्टूडेंट विंग एबीवीपीक समर्थन हासिल अछि। मुदा दुनूक बीच राजनीतिक वर्चस्व केर लड़ाईक नतीजा ई भेल जे जाहि बच्चा सभ कैं आपस मे मिल-जुलि पढ़ाई पर ध्यान लगेबाक चाही छल ओ एक-दोसरां के पहनावा के आधार पर अपन दुश्मन के रुप मे देखि रहल अछि। ई स्थिति नहि केवल शैक्षणिक सत्र के लेल नुकसानदेह बल्कि स्कूल-कॉलेज के माहौल कें लंबा काल धरि दूषित क राखि सकैत अछि। हालांकि मामला कोर्ट मे सेहो अछि आ जेना की हाईकोर्ट कहैत अछि जे एकर कानूनी पहल पर नमहर बेंच सुनवाई करत।, लेकिन एहि बीच सरकार आ कॉलेज प्रशासन कैं अपन स्तर पर मामला जल्द स जल्द सुलझेबाक कोशिश करबाक जरूर करबाक चाही।

कार्टून कोना
– : दीपम भारती



आर एन आई नंबर BIHMAI/2013/48732. प्रकाशक, मुद्रक, संपादक डॉ. चन्द्रमोहन झा द्वारा ग्रैजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन , सेक्टर अल्फा 2, ग्रेटर नोएडा स' प्रकाशित।
संपादक : डॉ. चन्द्रमोहन झा.
कार्यकारी संपादक : सतीश वर्मा*
(*पीआरबी एक्टक तहत खबरक चयन आ संपादनक प्रति उत्तरदायी)।
संपादकीय पता : ग्रैजुएट स्कूल ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन, एच एस 02, ब्लॉक एफ, सेक्टर अल्फा 2, ग्रेटर नोएडा-201308. फोन : 0120 422 5119 ई मेल-mithilamilan9@gmail.com. विमान सेवा शुल्क : 3 रुपया, नेपाल मे कुल मूल्य : 8 रुपया। कानूनी विवादक स्थिति मे मामलाक निपटान दिल्ली न्यायालयक अधीन होयत।

एहि बेर बीजेपी लेल यूपी अछि मुश्किल

राजनेता आ चुनावक मूड पर नजर राखय वला के मन मे लगातार ई सवाल औना रहल अछि जे 10 आ 14 फरवरी के जे यूपी मे पहिल आ दोसर चरण के चुनाव भेले ओहि मे ककर पलड़ा भारी अछि? एहि सवाल के कोनो रेडीमेड जवाब भेटनाई मुश्किल छै मुदा पहिल चरण के चुनाव मे जाहि 58 सीट पर चुनाव भेले ओहि मे अधिकांश सीट पर जाट, किसान आंदोलन आ मुसलमान वोटर निर्णायक भ' सकैत अछि। ओना ई बात अलग जे भाजपा सांप्रदायिक ध्रुवीकरणक पूरा प्रयास कयलनि, केंद्र सरकार के गृह मंत्री अमित शाह स्वंय रोड पर उतरि, घर-मोहल्ला आ दरवाजा-दरवाजा घूमि वोट मांगे लेल बौओलाह। कियेक त' भाजपाक शीर्ष नेतृत्व के पता छै जे जाट बिरादरीक नाराजगी आ किसान आंदोलन बीजेपी के लुटिया डुबा सकैत अछि।

आब सवाल छै जे की पश्चिमी उत्तर प्रदेश फेर सँ एक बेर बीजेपी कैं सत्ता दिला सकैत छै? एतबे टा नहि एहि दू चरणक मतदान सँ इहो साफ भ' जते की किसान आंदोलन सँ भेल जख्म अखनि धरि भरल अछि वा नहि? की मोदी सरकार जे तीनों कृषि कानून वापस लेलखिन ओहि सँ यूपीक किसान आ जाट भाई मोदी कैं माफ क देलखिन? यूपी मे एगो कहावत छै जे कियो पश्चिमी यूपी जीत लेलक ओ पूरा यूपी जीत ले छै। ऐना मे ई सबसँ पैघ सवाल छै जे की वेस्टिर्न यूपी मे एहि बेरक वोटिंग पैटर्न की



संदेश दैत छै?

पश्चिमी उत्तर प्रदेशक 58 सीट पर कुन पार्टी आ कुन गठबंधन के पलड़ा भारी रहबाक उम्मीद छै एकर पड़ताल करी त' आंकड़ा फिलहाल 50-50के दिस संकेत क' रहल छै। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावक पहिल चरण मे11 जिलामे विधानसभाक कुल58 सीट छै। पहिल चरणक वोटिंग मे कुल 58 सीट पर 60 फीसटी वोटिंग भेले। ई पिछ्ला बेरक 63.5 फीसद केर तुलना मे कम अछि। जाहिर छै वोटिंग परसेंटेज कम होबाक मतलब छै जे सत्तारुढ़ सरकार के प्रति नाराजगी छै ताहि कारणे सेहो वोटर बूथ दिस नहि मूव करलके। साल 2017 के विधानसभा चुनाव मे नोएडा मे 48.56 फीसदी वोट खसल छल जे वर्ष 2022 मे बढ़कर 50.10 फीसद भ' गेल। कैराना मे साल 2017मे69.56 फीसदी वोट खसल छल जे 2022 मे बढि क' 75.12 फीसदी भ' गेले। लोनी मे 2017 मे60.12 फीसदी वोट खसल छल जे एहि बेर2022 मे घटि क57.60 फीसदी भ' गेले। मथुरा मे2017 मे59.44 फीसदी वोट गिरल छल, जखन की2022 मे 57.33 फीसदी वोट पड़ल। साल2017 के विधानसभा चुनाव देखी त' 46.3 फीसद वोट के संग बीजेपी 53 सीट, 14.3 फीसद वोट के संग समाजवादी पार्टी 2 सीट आ 22.5 फीसद वोट के संग बसपा 2 सीट जीतल छल। राज्यक पहिल चरणक चुनाव मेजाही58 सीटों पर वोट खसल ओहि मे पिछ्ला बेर बीजेपी सभ पार्टी आ गठबंधन के सफाया क' देने रहथि आ अकेले 53 सीट पर कब्जा जमा लेने छल। मुदा एहि बेरक चुनाव मे सीन दोसर अछि। समाजवादी पार्टीक अखिलेश यादव आ राष्ट्रीय लोकदलक जयंत चौधरी ह्वादो किसान लड़कों' के नाम पर साथ-साथ चुनाव मैदान मेअछि। ग्राउंड मे जाट वोटर 80 फीसदी जयंत चौधरी के संग सर्वे मे दिख रहल अछि। पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे किसान आंदोलनक सबसँ बेसी असर दिख रहल अछि।ई मुद्दा नहि सिर्फ पहिल आ दोसर चरण बल्कि बाकी पांच चरणक चुनाव मे सेहो हावी रहत। ई बात तय अछि जे एहि बेर पिछ्ला बेर जकां बीजेपीक एकतरफा प्रदर्शन नहि भ' सकत। बीजेपी कैं नुकसान भ' सकैत अछि।

रूस-यूक्रेन विवाद आ भारत

रूस आ यूक्रेन युद्धक मुहाने पर ठाढि अछि। कखनहुँ युद्ध शुरू भ' सकैत अछि। रूस, यूक्रेन सँ28 गुना नमहर अछि, जकर क्षेत्रफल 1 करोड़ 70 लाख वर्ग किलोमीटर अछि। यानी रूस भारत स' करीब 5 गुना पैघ अछि। यूक्रेन, रूस के तुलना मे छोटा अछिआ भारत यूक्रेन स' तीन गुना नमहर कहल जा सकैत अछि। आम बोलचाल मे लोग सोवियत संघ कैं कहियो रूस कहैत छल, मुदा1991 मे सोवियत संघ जखन15 खण्ड मे बंटि गेल तहिया सँ रुस आ यूक्रेन आब अलग-अलग देश अछि। यूक्रेन मे करीब 20 हजार भारतीय रहैत अछि। अमेरिका अपन नागरिक कैं यूक्रेन स' सुरक्षित निकालि चुकल अछि। मुदा भारत अपन नागरिक लेल अखनि कोनो एडवाइजरी नहि जारी करने अछि।

दुनिया केर दु टा पैघ सामरिक शक्ति अमेरिका आ चीन इंतजार क' रहल अछि जे ओहिठाम की हैत। अमेरिकाक सैन्य अछिकारी एहि बातक चेतावनी द' चुकल अछि जे जँ दुनू देशक बीच युद्ध होइत अछि तँ सीरिया सहित पश्चिम एशिया मे व्यापक अस्थिरता पैदा होबाक आशंका अछि। अमेरिकी लेफ्टिनेंट जनरल एरिक कुरैला कहैत छथि जे रूसी सेना यूक्रेन कैं9 ठिकाना पर घेर कह्र राखने अछि। यूक्रेनक राजधानी कीव धरि रूसी सेना पहुंचि सकैत अछि। एहि कारणे अमेरिका यूक्रेन के मदद करबाक कोशिश क' रहल छै। अमेरिकी सेना अखनि धरि कुल 10 विमान हथियारक खेप यूक्रेन पहुंचा चुकल अछि। लगभग 400 टन गोला बारूद एहि हथियार मेशामिल अछि। अखनि लगभग 5 गुना अमेरिकी मदद आर पहुंचेबाक अछि। जखन रूस क्रीमिया पर



कब्जा क' चुकल छल, तखन यूक्रेन क लागे लागत जे कहीं ऐना न' भ' जायजे रूस पूरा यूक्रेन के अपना मेनहि मिला लिये। एकर जवाब मे यूक्रेन नाटो सँ हाथ मिला चुकने अछि। नाटो यानी नार्थ एटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाईजेशन, जे की एकटा सैन्य गठबंधन अछि। एहि संगठनक एकमात्र लक्ष्य थिक रूस आओकर समर्थक सभ कें बाहर राखब। अमेरिका आ ओकर सहयोगी कैं अंदर राखब। जर्मनी आओकर मित्र कैं जमीन सँ नीचा राखब। अखनि एहि संगठन मे दुनियाक 30 देश शामिल अछि। ई संगठन पुरान सोवियत संघ आ साम्यवादी व्यवस्था के खिलाफ बनल छल। आब नव वैश्विक जगत मेसोवियत संघ बिखरि चुकल अछि। आ ओकरे दु टा पुरान साथी एक दोसरा के आमने-सामने अछि। सोवियत संघ केर जगह पर आब चीन पैघ शक्ति के रुप मे उभरल अछि जे अमेरिका के सीधे चुनौती द' रहल अछि। जँ रूस आ यूक्रेनक बीच तनातनी बढ़ैत अछि तँ औकर असर पुरा दुनिया मे पड़ते आ दुनिया एक बेर फेर खेमेबाजी मे बंटि जायत। अंतर्राष्ट्रीय बाजार मे कच्चा तेल के दाम 93.90 डॉलर प्रति बैरल धरि पहुंच चुकल अछि। जे किछु समय पहिने एकर ठीक आधा छलै। जँ युद्ध भले त' कच्चा तेल के दाम आर बढि सकैत अछि आ दुनिया एहि सं प्रभावित भ सकैत अछि।

भारत फिलहाल दुनू देश सँ दोस्ताना संबंध बनेने अछि। जँ एहि दुनू देश मे टकराव भेल त' भारत कैं कोनो एक पाला मे जाय पड़ते। भारतीय कूटनीति एकर इजाजत नहि दैत अछि। भारत के लेल निष्पक्ष रहनाई सभसँ नीक स्थिति भ' सकैत छै। लेकिन भारत केरसँ अमेरिका केर गुस्सा पहिने सँ बढ़ल छै। भारत के लेल मुश्किल इहो छै जे ओ अपन सैन्य जरूरतक 55 प्रतिशत सामान रूस सँ खरीदैत अछि। एस400 मिसाइल सिस्टम लेबाक लेल भारत रूस सँ संपर्क साधने अछि आ अमेरिका एहि कोशिश मे छै जे भारत एहि प्रस्तावित सोवियत स' दूर रहय। भारत के लेल एकटा आर मुश्किल छै जे की प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के सेहो मित्र छथिन आ रूसी राष्ट्रपति पुतिन के सेहो। अमेरिका के लेल मुश्किल ई छै जे जँ वो रूस पर दवाब बनैते त' चीन रूस के करीब पहुंचि जतै। आ रूस आ चीन सन महाशक्ति कोनो नव बखेड़ा खड़ा क' सकैत अछि। भारत जँ अमेरिकाक समर्थन करैत छै तँ ओकर असर रूस सँ हुनकर रिश्ता पर पडि सकैत छै। भारत आ चीन मे लंबा समय स' सीमा विवाद चलि रहल छै आ रूस एहि मामला मे निष्पक्ष छै, जँ भारत अमेरिकाक पक्ष लैत छै त' भ' सकैत छै जे रूस चीन के पक्ष लेनाई शुरू क' दिये। सीधा-सीधी कहल जाय त' जँ भारत के चीन के सामना करनाइ छै त ओ अमेरिकाक अनदेखी नहि क' सकैत अछि। फिलहाल भारत 'रुको और देखो'क नीति केर पालन क' रहल छै। भारत चाहैत छै जे रूस कोनो आक्रामक रवैया नहि अपनाबै।

भाषा व्यवस्थापन मे कहाँ चुकि रहल अछि नेपालक प्रदेश सरकार

नेपाल डायरी





रामभरोस कापडि भ्रमर

बहुत बडका संघर्ष के बाद एखन देश संघीयता मे गेलाक बाद हमसभ प्रदेश पओने छी। साँच त' ईहो छैक जे सम्पूर्ण मधेश एक प्रदेशक संघर्ष रहैक जकरा शासनक नेतृत्वमे बैसल नेता लोकनि जखन संविधान जारी कयलनि त' मात्र सातटा प्रदेशक खण्ड आबंटित कएल गेल आ ई खण्ड तत्कालीन प्रदेश नंझ2 भ गेल जे एखन प्रदेश सभासँ दू तिहाईसं बेसीक बहुमत सँ मधेश प्रदेशक रुपमे स्वीकृत कएल गेल अछि। खेल त' नामो राखै मे कम नहि भेल। एहि क्षेत्रक प्राचीनतम् स्वरुपके ध्यान मे राखल जाए त मिथिला प्रदेश सर्वोत्तम नाम होइत। आ तखन ऐतिहासिके सन्दर्भ मे विचार करी त बुद्धकालीन बृज्जि महाजनपदक एकटा सशक्त राज्य बिदेहक औचित्य के पुनरावृति होइत। अर्थात इतिहास, पाणिनि द्वारा समेत उल्लेखित (पाणिनि,4,2,131) एहि वृज्जि सभक बीच मर्यादित बिदेहक गौरवके स्थापित करबाक अवसर भटैत। मुदा से संभव नहि भेल। नामकरण राजनैतिक निर्णय छल जकरा एहि प्रदेशक लगभग थोड़ बहुत सभ दल अपन मत द स्वीकृत क चुकल अछि, आब ई मधेश प्रदेश अछि आ इएह यथार्थ छैक। तखन प्रश्न उठाओल जा रहल अछिझ त की आब मातृभाषा पर त' ने कोनो प्रहार होयत आ एकर खुलासा त' प्रदेश के आधिकारिक निकाय मात्रे द' सकैए। से देबाको चाही। जँ बास्तविक बात समयपर आबि जाए त' घोकाएल पानिमे माछ मारबाक जोगार तकैत लोक कात भ' जाएत। नहि त' नामकरणके सभ रोष प्रदेश सरकारके माथपर बजरतैक जकरा लेल आर मुश्किल भ' सकैछ।

प्रश्न उठैत छैक झ भाषा सन संवेदनशील विषय के अन्हारमे राखि केकर हित कएल जा रहल छैक। एकदिस लादल गेल भाषा, सामन्त के भाषा, एक भाषा नीतिक प्रवर्तक भाषा कहि कोनो खास भाषा के आलोचना सेहो करब आ दोसर दिस नेपालक संविधान 2072क देल अधिकार सेहो प्रयोग नहि क' अनावश्यक रुपमे भाषा समस्याके रोकि कए राखए के की अर्थ? मधेश आन्दोलन के अभियान मे अपन मातृभाषा प्रति सम्मान सेहो छल से बात अभियन्ता सभ बिसरल जा रहल छथि। प्राथमिक शिक्षा मे मातृभाषाके प्रयोग संगहि सरकारी कामकाज के भाषा मातृभाषा होइक से अभियान सभ दशको सँ चलैत आएल तथ्य हमरा सभके आगा अछिए। प्रयोगक रुपमे काठमाण्डू महानगरपालिका मे नेवारी आ धनुषा जिविस तथा राजविराज नगरपालिका मे मैथिली कामकाज क' भाषा के रुपमे प्रारम्भ सेहो कएल गेल छल। मुदा बादमे सर्वोच्च के आदेश मे ओ निरस्त भेल। आ अन्ततः मातृभाषाझभाषीसभ निरस्त भेल दिनके कारी दिनके रुपमे मनबैत अपन दु:ख आ रोष देखबैत आएल अछि। आब ओहन स्थिति नहि छैक। आब त' संविधानक धारा 7 (2) मे नेपाली भाषाक अतिरिक्त प्रदेशक सरकारी कामकाजक भाषा प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशे निर्धारण करए से व्यवस्था कएल गेल छैक। अपन मातृभाषा प्रति प्रेम राखए वला प्रदेशक सभासद सभ एकमत सँ मधेश प्रदेश मे भाषा संबंधी निर्णय क' सकैत छथि। स्थिति स्पष्ट छैक। मुदा ओहिमे सरकार के चाँखि नहि भेला सं सभ क्षेत्रमे आश्चर्य व्यक्त कएल जा रहल छैक। भ' सकैत अछि, सरकारक अपन गृहकार्य नहि पहुँचल होइक वा अन्य रणनीति होइक। मुदा आबए वला दिनमे प्रदेश भाषा सम्बन्धि स्पष्ट आँकडा भेलाक बादो ओकरा अनावश्यक विवादित बनएबाक चलखेल अन्य क्षेत्र सँ भ' सकबाक बहुतो संभावना देखल गेलाक बादो निर्धारित कार्यक्रम आगा नहि बढौनाई के अर्थपूर्ण मानले जाएत।

सरकारी कामकाजक भाषा संबंध मे की छैक नीति?

नेपालक सरकार संविधान मे व्यवस्था भेल प्रावधान के आधार बना सरकारी कामकाजक भाषा सिफारिश करब सहितक काम सम्पादन करबाक हेतु एकटा सम्बैधानिक व्यवस्था कएने छैक झ भाषा आयोग के गठन क' क'। ओहो हाले मे सरकार के बुझौने अपन भाषा संबंधी प्रतिवेदन मे एहि प्रदेश मे सरकारी काम काजक भाषाके रुपमे पहिल मैथिली, दोसर भोजपुरी आ तेसर मे बज्जिका के रखबाक सिफारिश कएने अछि। नेपालक सविधान 2072 के दफा 7 के (1) मे सरकारी कामकाजक भाषा उप शीर्षक मे लिखल गेल छैक झ देवनागरी लिपिमे लिखल जाए वला नेपाली नेपालक सरकारी कामकाजके भाषा होयत। 7 (2) मे लिखल गेल छैक– नेपाली भाषाक अतिरिक्त प्रदेश अपन प्रदेश भीतर बहुसंख्यक जनता के बाजए वला एक या एक सँ अधिक अन्य राष्ट्रभाषा के प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेशक सरकारी कामकाजक भाषा निर्धारण क' सकैछ। 7 (3) मे भाषा सम्बन्धी अन्य बात भाषा आयोगक सिफारिश मे नेपाल सरकार निर्णय कएने अनुसार हयत। एहि परिप्रेक्ष्य मे मधेश प्रदेश मे सहज प्रयोगक अवधारणा राखि कए देखला मे मैथिली भाषाक प्रथम स्थान (24,47978) देखल जाइत अछि। तहिना दोसर स्थान भोजप्रुी (10,03973) लेने छैक। ई सभ मधेश प्रदेशके भाषाक अवस्था संबंध मे स्पष्ट देखबैत छैक जे नेपाली त' संविधान पूर्वे तय कएने छैहे, प्रदेश अपना ढाममे बाजल जाए वला मातृभाषाक संख्या के विचार कएला पर ई दू भाषा सर्वसम्मत रुप मे प्रदेश क' कामकाजक भाषा बनाओल जा सकैत अछि। बनाबे लेल त' भाषा आयोगक सिफारिश अनुसार बज्जिका सेहो भ' सकैछ। ई त' सरकार पर निर्भर छैक। केंद्रीय तथ्याँक अनुसार 2068 के जनगणना मे प्रदेश मे 89 भाषाक अस्तित्व देखाओल गेलाक बादो 1 लाख सँ अधिक बाजल जाए वला भाषा सात टा मात्र छैक– मैथिली, भोजपुरीक अतिरिक्त बज्जिका (791642), नेपाली (360276), उर्दु (31,7060) थारु (203575) आ तमांग (104984)। आब संविधान निर्देश कएने वाक्यांश बहुसंख्यक के आधार ल' क' सम्पूर्ण निर्णय करबाक बाध्यात्मक अवस्था देखल जाइत अछि। आब ओहि मे सेहो कतेक के कामकाजक भाषा बनाओल जाएत? एहिमे भाषा आयोग के भूमिका सेहो महत्वपूर्ण भ' सकैत छैक। ओ भाषाक मान्यता के मुख्य छह टा आधार (मापदण्ड) निर्धारण करबाक काम कएने छल, कोनो भाषाके सरकारी कामकाजक भाषा बनाबक हेतु। ओ रहैक–

(क) प्रदेश मे भाषा बाजए वला वक्ता के संख्या
(ख) भाषिक पहिचान
(ग) लेखन प्रणाली
(घ) भाषा के स्तरीकरण
(ङ) भाषा के स्वीकार्यता
(छ) भाषा के ऐतिहासिकता

एहि छह टा बुंदा सभ मे आओरो विशेष छलफल के आवश्यकता भाषा आयोग महसूस कएने छल। आ एहि संबंधी कार्यक्रम जखन आगा बढल त' किछु आर आधार जोडल गेल रहैक। खास क' भाषा संबंध मे एहि प्रदेश के जिल्लाक स्रोत व्यक्ति सभसँ कोरोना के कारण भेल वर्चुअल अन्तर क्रियामे बहुत रास नव सन्दर्भ सभ आएल छल जकर समावेश भाषा आयोग अपन टटका प्रतिवेदन मे कएने अछि। आयोग एहि सं पूर्वो मे बझाओल प्रतिवेदनमे सरकारी कामकाजक रुपमे जँ कोनो भाषा के राखल जाएत त' की की व्यवस्थापन कर पड़तैक तकर उल्लेख कएने छल। भाषा आयोग अपन पहिल सालक प्रतिवेदन के परिच्छेद 6 मे (2073 भाद्र 23 गते सँ 2074 आषाढ़ मसान्त) सरकारी कामकाजक भाषा सम्बन्धी अपन एहन धारणा रखैत काल सरकारी कार्यालय मे अभिलेख रखलापर, कार्यालय सभके नामाकरण कएला पर, औपचारिक कार्यक्रम मे सम्बोधन कएला पर, सार्वजनिक सरोकारक विषय मे सम्बोधन कएला पर, जेहन प्रसंग उल्लेख करैत नेपाली भाषा अनिवार्य करबाक सिफारिश कएने अछि। मुदा आयोग दोसर प्रतिवेदन (2074झ075) धरि अबैत अबैत प्रदेश सभक भाषाझभाषीके मिजाज के अध्ययन कएलाक बाद अपन सिफारिश मे व्यापक सुधार कएने देखल गेल अछि। प्रतिवेदन के परिच्छेद सात मे नेपाल सरकार के सिफारिश तथा सुझाव अन्तर्गत 7(2) के संविधान बमोजिम सरकारी कामकाजमे भाषा प्रयोग उप शीर्षक मे सिफारिश कएला पर (क) मे आएल वाक्यांश तीनु तहके सरकारी अभिलेख नेपाली भाषा मे रहनाई अनिवार्य होएत। संघ, प्रदेश आ स्थानीय तहमे सरकारी अभिलेख रखला पर अन्तरभाषिक अनुवाद पद्धति विकास करबाक जरुरी छैक– राखल गेल छैक। तहिना (ख) मे आएल वाक्यांश बहुभाषिक कार्यप्रणाली अनुसार नेपाल भीतर संचालन होबए वला औपचारिक सभा, समारोह आ सार्वजनिक संचार के माध्यम सभमे नेपाली भाषा आ अन्य राष्ट्रभाषा सभके प्रयोग विस्तार मे नेपाल सरकार के जोड़ देबए पड़त। (घ) मे आयोग जनभावनाके कदर करैत संघीयता के मर्म प्रति संवेदनशील होइत सिफारिश मे लिखने अछि– नेपालक संविधान के धारा 7 (2) अनुसार नेपाली भाषाक अतिरिक्त अन्य राष्ट्रभाषा के प्रदेश अपन प्रदेश भीतर प्रदेश कानून बमोजिम प्रदेश क सरकारी कामकाजक भाषा निर्धारण कएला पर प्रदेश तहके सरकारी कामकाजक अभिलेख ओहि भाषामे सेहो रखनाई अनिवार्य होयत। एहिठाम हमसभ की देख रहल छी जे आयोग अपन पहिल प्रतिवेदन मे नेपाली भाषाक प्रयोग मे कठोर नीति लेने सन सिफारिश कएने अछि। अभिलेखके भाषा नेपालीये होए से अभिप्राय छैक। मुदा अपन दोसर प्रतिवेदन मे प्रदेश सरकार निर्धारण कएने नेपाली के अनिवार्यता वाहेक के अन्य भाषा के सेहो अभिलेख मे स्थान देब पर अनिवार्यता प्रति सतर्क रहल देखल जा सकैत अछि। ई परिवर्तन साल भरि के प्रदेश भ्रमण आ ओहि ढाम सँ प्राप्त भेल अवधारणा के परिणाम मानल जा सकैत छैक। ई मातृभाषाके महत्वके स्थापित करबामे मदत करैत अछि। तेसर प्रतिवेदन मे त' आयोग स्पष्ट रुपसं भाषाके किटान क' चुकल अछि।

आब की करब?

मधेश प्रदेश के सरकार भाषा संबंधी व्यवस्थापन के लेल दीर्घकालीन रणनिति बनाबए आ ओकर कार्यान्वायन करए लेल 2075।076 के नीति तथा कार्यक्रम संसद मे प्रस्तुत करैत काल 96 नबंर बुन्दा मे प्रदेश संस्कृति तथा भाषा प्रतिष्ठान गठन करबाक प्रतिबद्धता जना चुकल अछि। आ ओकरा लेल 2075।076 के बजट मे सेहो रकम छुटयओने देखल जा सकैत अछि। मुदा आई कतेको महिना पुरा भेलाक बादो ओहि दिस कोनो पहल नहि भ' सकल अछि। एकरा कारणसँ भाषा, साहित्य, संस्कृति आ कलाके क्षेत्रमे असमंजस यथावत अछि। प्रदेशक भाषा नीति स्पष्ट करबा लेल सरकारके पहल जरुरी छैक। नेपालक भाषा आयोगक अध्यक्ष एवं पदाधिकारी सभ मदत करबा लेल तैयार अछि। कामकाजक २भाषा निर्धारण भेलाक बाद अन्य भाषा के सेहो उचित सम्मानके लेल आवश्यक नीति तथा कार्यक्रम बना ओकर कोनो अधिकारीक निकाय के गठन जरुरी छैक, जेकर प्रतिबद्धता सरकार अपने व्यक्त क चुकल अछि। एकरा लेल सामाजिक विकास मन्त्रालयके पहल करए पड़त। तहिना एहि मन्त्रालय अन्तर्गत भाषा, साहित्य, सांस्कृतिक अभिभारा भेलाक कारणें एखनुक समस्या के सहजीकरण करबाक जिम्मेवारी सेहो एहि मन्त्रालय के हयत। आयोग स्वीकृत भाषा के अभिलेख के लेल दोभाषिया अथवा अनुवादक के व्यवस्था करबा लेल सेहो सुझाव देने छैक। एहिमे एकटा त विभिन्न भाषा समूह सँ निजी स्तर मे अनुवादक के औपचारिक आहवान क ओकरा प्रमाणित करबाक आ समय मे सहयोग लेबाक काज कएल जा सकैछ। एकरालेल भाषा बाजल जाए वला संख्या आ शिक्षा के पठनझपाठन स्तर के सेहो आधार बनाओल जा सकैत छैक। सँगहि कामकाजक भाषाक अतिरिक्त सेहो भाषाझभाषी सभके प्रदेश मे रहल वसोवास आ आवश्यकता के ध्यान मे राखि दुभाषिया या अनुवाद के माध्यम सँ सरकारी कामकाज मे उपभोक्ता के भाषा मे बयान, निवेदन आदि प्राप्त क सकैत अछि। मुदा एकरा लेल सरकारके पूर्णरुपेण सक्षम होबए पड़त। दोसर तरीका छैक तत्काल भाषा, साहित्य प्रतिष्ठान के गठन क कामकाजक स्वीकृत भाषा सभसँ वाहेक सेहो बाकी रहल भाषा सभ के विकास के लेल नीति आ कार्यक्रम बना कार्यान्वयन करबाक। भाषा आयोग सेहो अपन प्रतिवेदन(2074–2075) के धारा 3.4.1. मे भाषा सभके अध्ययन अनुसन्धान उप शीर्षकमे लिखने छैक–(क) प्रदेशक लेख्य तथा समृद्ध भाषा एवम् मौलिक परम्पराक भाषाक अध्ययन अनुसन्धान क एक भाषा के सामग्री दोसर भाषा मे अनुवाद करबाक, अनुवादक सभ तैयार करबाक, मौलिक लेखन आ अनुवादक के पुरस्कृत करबाक, विभिन्न भाषाक पुस्तक प्रकाशन करबाक, संचार माध्यम मे प्रयोग करबाक आ देशक मुख्य भाषिक सम्पदा विभिन्न भाषामे प्रकाशन करबाक व्यवस्था मिलाबए पड़त। एखनुक अवस्थामे ई विकल्प सभसँ उचित देखाईत अछि।

एकरा लेल भाषा, साहित्य क्षेत्रक संघझसंस्था आ विज्ञसभ प्रदेश सरकारके प्रतिष्ठान गठनके लेल निरन्तर आग्रह करैत आएल अनेको प्रसंग छापा सभमे आबि रहल अछि। सरकारी कामकाजक भाषाके रुपमे प्रयोगक सरकारी मान्यता सेहो सभ भाषाके तत्काल फायदा पहुँचा सकैत अछि तेहन हमरा नहि लगैत अछि। ओकरा लेल भाषा आयोग निर्धारित कएने 6 टा मापदंड पुरा कएलाक बाद मात्र सहज भ सकैछ। ओहिमे सेहो सरकारी कामकाज मे अभिलेखीकरण के लेल आवश्यक शब्द संपदा आवश्यक हयत। लीपि, प्राचीनता आ समृद्ध साहित्य संगहि भाषाझभाषीसभ के प्रशस्त संख्या भेलाक बादो भाषा लिख आ पढ़ि पएबाक सहजताके सेहो एकटा मुख्य आधार मानल जा सकैत अछि।

एहन अवस्थामे आब एम्हर गंभीरतापूर्वक नीतिगत कार्यसभ भाषाझभाषीसभ द्वारा शुरू कर पड़त। भावना आ आवेगमे कोनो निर्णय कएलापर ओ वास्तविक उपलब्धि देबए नहि सकत, वरु आओर अवरोधे सृजना करत। सरकारी काम काजक भाषाकेरुपमे स्वीकृत भ गेलाक बादक अन्य भाषाके विकासके लेल सेहो एहन प्रतिष्ठान सहायक भ सकैछ। भाषा आयोगक सिफारिशमे आएल नितिगत आधार सभ एहिदिस संकेत करैत अछि। भाषा आयोग आ प्रदेश सरकार तत्काल एहि दिस कार्यक्रम के शुरूआत करए से आवश्यकता देखि पडैछ। देशमे बाजल जाएबला 123 टा भाषा मध्ये सभके बचएबाक दायित्व सरकारके होइत छैक आ एकरा लेल ओकर संरक्षणके कार्यक्रम आगा बढ़ाबए पड़त। एहिमे संघ, प्रदेश दुनू सरकारके दायित्व निर्वाह करए पड़तैक। ओना जनगणनाक टटका प्रतिवेदन आएब बांकी अछि ,तथापि मैथिलीके ई बेसी प्रभावित करत से लगैत नहि अछि। तँ मात्र तकरे मुँहतक्कीमे भाषा भाषी बीचमे आब आर असमंजक स्थिति नसह बनाओल जएबाक चाही।

मिथिला मे सेहो वेलेंटाइन डे मनेबाक चलन शुरू, रेड कलरक आउटफिट रहल ट्रेंड मे





भावना मिश्रा

मिथिला मे त' ओना वेलेंटाइन डे मनेबाक कोनो खास चलन अखनि नहि भेल अछि मुदा महानगरक देखौंस मे मिथिलाक किछु शहरक अल्ट्रा मॉडर्न प्रेमी जोड़ा आ अल्ट्रा मॉडर्न विवाहित जोड़ा सभ सेहो वेलेंटाइन डे मनैना शुरू क' देने छथि। ओना मिथिला के त' अपन खास परिधान रहल अछि। एहि ठाम मौसम के अनुकूल परिधानक विधान अछि। मुदा वेलेंटाइन डे क' ल' मिथिला मे सेहो 14 फरवरीक दिन रेड ड्रेस खूब ट्रेंड मे रहल। प्रेमक दिन के रूप मे मनायल जायत वेलेंटाइन डे यानि 14 फरवरी कें मिथिला मे सेहो ज्यादतर मिथिलानी महिला, विवाहित जोड़ा आ लव बर्ड्स सभ लाल रंगक ड्रेस पहनि क' पूरा उत्साहक संग एहि स्पेशल डे क मनौलनि।

ओना त' कतेक लोग एहि दिन आन-आन रंगक ड्रेस सेहो पहिरने छलाह मुदा एहि दिन लाल रंगक विशेष महत्व अछि। एतबे टा नहि एहि दिन लाल गुलाबक सेहो विशेष महत्व छै। प्रेमी अपन प्रेमिका कें एहि दिन विशेष रुप सँ लाल गुलाब भेंट करैत छथि। वेलेंटाइन डे यानी 14 फरवरी के दिन लाल रंग कें कियैक एतेक स्पेशल मानल जायत अछि। एकर पाछां की इतिहास छै। एहि तमाम सवाल के जवाब आऊ जानैत छी।

लाल रंग थिक प्यार के रंग

लाल रंग के लव सिंबल यानी प्यार के रंग के रूप मे देखल जायत अछि। एहि कारणे वेलेंटाइन वीक आबय सँ पहिने मॉल्स, थियेटर, शॉपिंग सेंटर आ रेस्टोरेंट सभ जगह पर लाल रंगक सजावट देखबा मे आबैत अछि। लाल रंग के बलून, रिबन, फूल, खूबसूरत आउटफिट सन चीज से ई सभटा गुलजार भ जायत अछि।



Happy Valentine's Day

पहिने लाल रंग के मानल जायत छल प्यारक रंग

लाल रंग के कखनहुँ त्याग के रंग मानल जायत छल। जानकारी के अनुसार रोम मे मध्य युगक चर्च के पादरी ईशु मसीह आ बाकी शहीद सभ कें श्रद्धांजलि देबाक लेल लाल जे कियो चर्च आयल छल से सभ लाल रंग के कपड़ा पहिरने छलाह। एतबेक टा नहि एहि रंग के गुस्सा, जंग आ खतरा के रूप मे सेहो देखल जायत अछि। मुदा तकर बाद एकटा प्रेम कविता मे लाल रंगक गुणगान सँ ई रंग प्यारक रंग बनल।

एहि तरह बनल लाल रंग प्यारक रंग

कहल जायत अछि जे लाल रंग के प्रेमक रंग मे बदलबाक महान काज ग्रीक समुदाय द्वारा केल गेल छल। दरअसल एकर पाठुक वजह छल एकटा ग्रीक कविता 'रोमन डी ला रोज', जे की ओहि काल काफी फेमस भेल छल। ओही कविताक अनुसार एक व्यक्ति लाल रंगक गुलाब केर खोज मे निकलल छल आ एहि खोजक दौरान हुनका अपन प्रेम आ जीवन संगिनि भेटि गेल छल।

मिथिलाक प्रसिद्ध तीमन अरिकंचन केर चक्का



अर्चना मिश्रा

चक्का बनबे लेल सामग्री

1. अरिकंचनक पात
2. बेसन- एक कप
3. हरैद- एक चम्मच
4. जीर-एक चम्मच
5. हींग-एक चुटकी
6. नुन- स्वाद अनुसार
7. चक्का तरे लेल तेल

तीमन करै लेल मसाला

1. दही- तीन सँ चारि चम्मच
2. धनी बुकनी- दू चम्मच
3. मिरचाई बुकनी- अपन स्वाद अनुसार
4. कश्मीरी मिर्चक बुकनी- आधा चम्मच
5. नुन- स्वाद अनुसार
6. हरैद- एक चम्मच
7. जीर बुकनी- एक चम्मच
8. सरसों- एक चम्मच पीसल
9. अदरक - छोट सन टुकरी पीसल
10. फोरन देय लेल-पंचफोरन





बनेबाक विधि

एकटा पैघ कटोरा मे बेसन मे मसाला सब द' खूब नीक सँ मिला लेब। ने बेसी गाढ़ि आ ने बेसी पातर। अरिकंचनक पात के धो क' पहिने साफ क' लेब। सबसं पैघ पात नीचा मे दए खूब नीक सँ बेसन लगा क' पात पर पात दैत साटि लेब आ नीक सँ दाबैत लोरहा बना लेब। ओकरा बढ़िया सँ पातर-पातर चक्का काटि लेब। चक्का खूब नीक सं कम आंच पर तरि क' निकालि लेब। तेल जे बचत ओहि मे पंचफोरन हींग द; जखन फोरन पाकि जाय तँ मसाला द' नीक सँ भुजि लेब। मसाला स' तेल छोरै लागए त' बुझि जाऊ मसाला भुजल गेल। तखन रंग नीक अनबा लेल कश्मीरी मिर्चक बुकनी खसा दी अपन अंदाज सँ। झोर द' दियो आ जखन झोर बरैक जाएत तँ तरल चक्का खसा दियो। कनि काल कम आंच पर बरकै ला छोड़ि दियो। चारि-पांच मिनटक बाद गैस बंद क' दियो। परसे लेल अरिकंचनक तीमन तैयार।







लद्दाख यात्रा

लेह मे पहिल बेर



डॉ. कीर्तिनाथ झा

लामाक भूमि मे गामा जुनि बनी से बहुत दिन स' सुनल छल। किन्तु, जखन बंगलौर से सोझे लेह केर पोस्टिंग ऑर्डर आयल छल तखन धरि एहि कहावतक असली अर्थ बुझब बांकिये छल। लेह पहुंचला पर हवाई अड्डा पर लेफ्टिनेंट कर्नल विधान चंद्र त्रिवेदी, दरभंगा मेडिकल कॉलेजक 1974 बैच के हमर जूनियरठाढ छलाह। हुनक मुस्कुरायत छवि आश्वस्त कयलक आ हम स्वभावत धफरि क' विदा भेलहुँ, त' कर्नल त्रिवेदी सावधान करैत कहलनि सर धीरे-धीरे चलु। माने तेज चलब त' श्वास नहि फुललय लाग, फेफड़ा नहि बम बाजि जाय। तखन मोन पड़ल एहि कहावतक अर्थ।एतबा त' बुझल छल समुद्र तल स' 10,500 फुट के ऊंचाई पर लेह मे गाछ-वृक्षे टाक नहि ऑक्सीजनक कमी सेहो छै।

हम जहिया लेह पहुंचल रही तखन अगस्तक मास रहैक। दिनक तापमान प्राय 11 डिग्री सेंटीग्रेड छल हैतेक, राति मे प्राय 1-2 डिग्री सेंटीग्रेड। लेह के हिसाबे गर्मिये जकां भैले मुदा, दिल्ली के हिसाबे भयंकर जाड़। तैं जाड़ सँ नुकसानक भय नहि छल से कोना कहब। अनिवार्य आरामक छह डिन पुर होला पर पहिल दिन गाड़ी सँ लेह बाजार होयत सिंधुक दर्शन लेल विदा भेलहुँ। शहर स' पूब दक्षिण करीब 5 किमी पर बाट मे जतेय देखु छिड़िआयल बौद्ध स्मारक मंदिर। एकर सभक परिचय पछाति देब। तैं अखन सोझे सिंधु चरण तल। एते लेह स' मनाली आ चांग थांग दिस जाइत हाउवे के दक्षिण समतल भूमि मे पूब स' पश्चिम दिस बहैत सिंधु नदीक पाट चौड़ा भ' जाइत अछि। वाजपेयी सरकार अपन शासन काल मे एतय नदीक कछेर पर पक्का घाट बनवा सिंधु दर्शनक आयोजन केने छल। तहिया सँ एहि स्थान के सिंधु दर्शन कहल जाइछ। हमरा लोकनि गाड़ी रोकि एते घाट पर एलेहुँ। सिंधुक पवित्र जल के स्पर्श कयल, आब विशाल नदी सब मे सेहो पवित्र जल भेटब असंभव. अनंत काल स' बहैत कलकल हरियर कचोर सिंधु अपन अमृत आसव स' एहि प्रदेश क' तैं सींचैत छथिये, एकर आगू नीचां सूदूर अरब सागर धरि कछेरे-कछेरे बसल जनसमूहक जीवन रेखा छल। प्रसार मे संकीर्ण, कतहुँ उत्थर, कतहुँ गंहीर, प्रकृतिये चपल चंचल आ नयनाभिराम सिंधु केर पवित्र शीतल जल के स्पर्श करैत भेल जेना जीवन सफल भ' गेल। सरिपहुँ राष्ट्र गान मे भले सिंधुक चर्चा हो, सिंधुक स्पर्शक अवसर विशिष्ट थिक, तैं लेह अयला पर ऑफिसर मेस सँ बाहर हमर पहिल पड़ाव हमर सिंधुए तट थिक। अत दु पांति सिंधुक प्रशस्ति मे-

दूर सूदुर गगन के छूने
दृढ़ता सँ पृथ्वी के धेने
हिमगिरी केर मायावी उर सँ
कविक मनक कविता सन मधुमय
तरल विरल कमनीय धारलय
सिंधु अहां छी हार कंठ के
भारत भूमिक नाम
दर्शन भेल सफल भेल जीवन
शत शत नम्र प्रणाम

लेहक पर्यटन स्थल

लेह लद्दाखक गप सैनिक लोकनि सँ करबैन त' बहुतो गेल हेताह, सुनल त' बहुतो के हैतेन, मुदा जनसाधारण मे क्यो लेह गेथ होथि से आभावृतिये भेटताह। दूरी दुर्गम बाट प्रतिकूल वातावरण, खर्च आ प्राथमिकता ताहि पर गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथसंग कोनो तीर्थ जँ लद्दाख मे रहिते तँ लोग तीर्थाटन लेल लद्दाख जेबो करैथ। मुदा लद्दाख मे ओह सब किछु नहि। ततबे नहि सिंधु पर जहां गंगा जकां पापोधारिणी होइतथि तँ लोग सिंधू मे डूबो लगबे लेल लद्दाख धरि जाइत। मरबा काल गंगा जल आ आबे जमजम जकां सिंधु जल सेहो मनुक्खक जीह पर देल जतैक।

लेह केर शांति स्तूप

शांति स्तूप विश्व भरि मे बौद्ध आस्थाक प्रतीक थिक। सारनाथ हो या सांची, काठमांडू, पोखरा, कुशीनगर, अनुराधा (श्रीलंका), थाइलैंड वा चीन। स्तूप सबतरि देखबैक। परंपरा सँ स्तूप सभ बौद्ध अवशेष, भिक्षु लोकनि समाधि वा विशिष्ट भूमि पर बनावल जायछ। सारनाथक स्तूप महात्मा बुद्ध केर पहिल उपदेशक स्थल थिक। सांचीक स्तूप बुद्ध केर अवशेषक समाधि थिक। तहिना भारतीय सहयोग आ एकटा जपानी भिक्षुक प्रयासे बनल लेह केर शांति स्तूप बौद्ध स्माकरक टा नहि एतुका ध्रुवतारा थिक।

तिकस्सुरू स्तूप

जँ, पर्यटन केर प्रमाणिक स्रोल लोनली प्लानेट के मानी, त' लद्दाखक सबसँ पैघ आ कच्चा इट्टा आ माटिक बनल तेस्सरु स्तूपक निर्माण भूत-प्रेत के नियंत्रण करबा लेल भेल रहल अछि।जनश्रुति छै एहि स्तूप सँ पहिने एहिठाम पीयर रंगक एकटा विशाल पाथरि पिंड मे प्रेतक निवास छलै। लोकक कहब छै राजमहल केर ठीक पछुअति मे स्थित एहि पाछरि पिंड के देखते तत्कालीन रानी अस्वस्थ भ' गेल रहथि।

- जोरावर किला
- गुरूद्वारा श्री पत्थर साहेब आ दातून साहेब
- रम बाबाक मंडिर
- माथो गामक, बौद्ध विहार आ माथो विहारक भविष्यवक्ता
- माने रिंग्मो
- शहीद स्मारक का हॉल ऑफ फेम
- मैग्नेटिक हिल
- जान्सकार आ सिंधु नदीक संगम

खर्दुंगा-ला-पास

भूमि पर पत्थर आ आकाश मे माथ जँ कतबो चरितार्थ होइछ त' केवल पर्वतक माथे ही पर। ताहि मे उत्तर मे नुब्रा उपत्यका आ दक्षिण मे लेहक बीच गगनचुंबी लद्दाख पर्वत श्रृंखला के पार करबाक सबसँ सुलभ स्थान थिक खर्दुंगा-ला-पास। लेह स करीब 45 किमी उत्तर मे 18,387 फीटक ऊंचाई पर स्थित खर्दुंगा-ला-पास हेबनि धरि देशक सबसँ ऊंच मोटर बुल पास छल।

गाम घर सँ

जखन धरती पहिन लैत छथिन पीयर रंगक साड़ी



मिथिलेश कुमार राय

कलका बात छी। कक्का कहैत छलाह जे सरिसो मे फूल उगे लागले। ई बसंत के अयबाक आहट थिक। जखन ओ ई बात कहैत छलाह तखन हुनक चेहरा खिल गेल छल। हुनक ठोर पर मुस्की सेहो आबि गेल छल।हम हुनक आंखि मे झांकि क' देखलिये त' हमरा ओहिठाम एकटा उम्मीद देखाय पड़ल। कक्का कहैत छथि जे वसंत सच मे राजा होइत अछि। मौसमक राजा। वसंत जखन आबैत अछि त' जन-जन प्रसन्नता आ उल्लास स' भरि जायत अछि। देखु त, गहूमक बिराड़ जवान भ' रहल अछि। ओहि मे स' बाली निकले लागल अछि। एकरा देख ककर मन आनंदित नहि होयत। ई देखि क' ककर मन आनंदित नहि होयत। जाहि फसलक लेल अगहन बीतला स' पहिने स' लागल रहल छथि, जाहि फसल के लेल लोग पूसक हाड़ गलबय वला ठंडी मे कनतककन पानी सँ खेलि गेल। आब माघ मे ओहि फसल मे फूल आ दाना निकलि रहल अछि। मेहनत आ आस स'बाउग करल्ल बिराड़ सँ जखन अंकुर फूटैत छै तखन लोग बहुत उल्लासित आ मुदित भ' जाइ छै। आ जखन ओहि मे फूल खिल उठै छे तखन मोन झूमि-झूमि क' गाबे लगैत छै। छै न।

हम कक्का के हां मे हां मिलेलहुँ। दु-तीन महीना रोपल गेल बिराड़ि आबि घना फसल के रुप मे बाहर आबि गेल अछि आ एहेन लगैत छल जेना फूल आ ओकर गंध पूरा गामके घेर लने छै। सरोक पीयर-पीयर फूल के दृश्य देखबा मे एहेन लागैत छल जेना धरती एकटा एहेन साड़ी पहिरने होय जकर रंग हरियर त' छै मुदा ओहि पर जे पीयर रंग के छींटा वला प्रिंट सौंसे धरती केँ



पीरौंछ करने होय। ई सब कोनो जादू सन लागि रहल छल जे हकीकतो मे दृश्यमान छल। हवाक झोंकाक मिजाज सेहो बदलि रहल छै। बस्ती स' दूर बांससक झुरमुट मे जत' चिड़ियांक बसेरा अछि ओतय स' कलरव के स्वर बेसी गूंजै लागल अछि। लोग सभ कतो देखैत छथि त' हुनका सभक आंखि के किछु खटकैत नहि अछि। आंखि एहि दृश्य क' निहार तृप्त नजरि आबि रहल अछि।

कक्का केंआब फूल सभ के देख किछु आउर मोन पड़ि गेल छल। ओ कहय लागलखिन जे वसंत आबे पर दृश्य सभ मे फूल लटक जायत छै। लेकिन ई सभकोनो जादू सँ नहि होइत छै। फूल के सेहो कोनो मायना होइत छै। जाहि फूलक मायना सिर्फ फूल होइत छै आ ओहि मे कोनो तरहक फल नहि लगैत छै, वसंत ओकर भरोसे नहि आबैत छै। ओ कहैत छलाह जे वसंतक आबै के मतलब सिर्फ आ सिर्फ फसलक फूल सँ होई छै। फूल खिलबाक मतलब परिश्रम स' बनैत छै।तीन मासक लगातार परिश्रम स' जखन पौधा मे फूल लगैत छै तखन ओ असल मे परिश्रमक सार्थकताक घोषणा जकां होइत छै। कक्का कहैत छलाह जे वसंत सिर्फ एकटा मौसम के नाम नहि थिक, वसंत एकटा संदेशवाहकक नाम सेहो थिकजे फूलक माध्यम सँ परिश्रमक फलक संकेत दैत अछि। कक्का कहैत छलाह जे वसंतक चेहरा जँ एतेक सुंदर अछि त' ओ मटर मे आयल फूलक कमाल छियै। राजमाक पौधा मे खिल रहल फूलक कमाल छियै। खेसारीक नीला-नीला फूलक कमाल छियै। ओकर चेहरा मेमकई आ गहूमक पौधाक हरियालीक असर छियै। वसंत आबि क' एहि फूल सभ मे भरि के अपना आप केँ खुशनशीब क रहल अछि। वसंत जायत-जायत एहि फूल सभ केँ दाना सँ भरि दैत। लोग सभक चेहरा पर ईहै सौचि क खुशी पसर रहल अछि। चिड़िया सभ सेहो ताहिलेल बेसी कलरव करैत फुदकि रहल अछि कियैक तँ जतय तक चिडिया सभ उड़ान भरैत छै ओकरा सभ जगह दानाक उम्मीद देखाड़ मे आबि रहल छै। हवा सेहो ताहि लेल झूमि रहल अछि कियैक त ओ सभ फूलक रस ल क टहलि रहल अछि। हम कक्का के अकबक सुनैत रही कि एकाएक ओ हमर तंद्रा तोड़लखिन। ओ कहलखिन बिना फूल-पत्ती आ पेड़-पौधे के वसंतक आगमक कल्पना क कनी देखू त जरा! फेर ओकहलखिन फसल, पेड़-पौधाआ फूल-पत्ती सभटा मिल क धरती पर वसंत रचैत अछि!

असहनीय अछि मैथिलीक अपमान

कतबो हिन्दी उपेक्षा करत हम बाँचल रहब, मैथिलीएक उन्नति पर हिन्दीक समृद्धि निर्भर अछि



दिलीप कुमार झा





मैथिलीकें मान मर्दन करैक घटना,मैथिली भाषाकें दोयम दर्जाक भाषा सिद्ध करबाक कुत्सित प्रयास बरोबरि होइत रहैत आछि।पता नहि मैथिली भाषा संग जानि बुझि कियै एहन व्यवहार कयल जाइत अछि। हमरा लगयै मैथिली विरोधी तत्व सभ बेर-बेर हमरा सभक हैसियत बुझबैत रहैत अछि।मुदा ई मूर्खतापूर्ण चालि छी।ककरो कहलासँ मैथिली हिन्दीक बोली वा उपभाषा नहि भ' सकयै।मैथिलीक हजार सालक साहित्य झपा नहि सकयै। हालहि मे दरभंगाक सांसद श्री गोपालजी ठाकुरक प्रश्नक उत्तरमे भारतक शिक्षा राज्यमंत्री सुभाष सरकार संसदमे उतारा देलनि जे सीटेट परीक्षा मे मैथिली कें शामिल नहि कयल जा सकैत अछि कारण बिहार सरकारक प्रारंभिक विद्यालयक पाठ्यक्रम मे मैथिली शामिल नहि अछि। दोसर ओहि प्रश्नक पूरक उत्तरमे ओ एकटा आर नांगरि जोड़ि देलनि जे मैथिली हिन्दीक उपभाषा थिक। भारत सरकारक कोनो मंत्रीक भाषा सन संवेदनशील विषय पर एतेक नेनमति वला उत्तर देल जायत तकर अपेक्षा किन्हु नहि छल।

मंत्रीक उत्तर घोर आपत्तिजनक अछि। मैथिल जनमानसकें आहत करैवला अछि। असंवैधानिक अछि। जाहि भाषाकें भारतक संसद बहुमत सँ संविधान संशोधन क' संविधानक आठम अनुसूचीमे राष्ट्रीय भाषाक दर्जा देने अछि। 1965 मे साहित्य अकादमी सम्मानपूर्वक शामिल कयने अछि ओकरा कियो जिम्मेदार भारतीय नागरिक कोनो भाषाक उपभाषा वा बोली कोना कहि सकैत अछि। मुदा से कहल गेल, से लीखि क' कहल गेल अछि। एहि विषयपर मिथिला क्षेत्रमे बहुत तिखगर प्रतिक्रिया भेल। एहि उपभाषाक झंझटमे मूल मुद्दा गायब भ' गेल।

मूल मुद्दा अछि सीटेट परीक्षामे मैथिली विषयकें शामिल कयल जाय। अपने लोकनिकें जनतब दी जे तिब्बती,खस, आदि जे भाषा संविधानक आठम अनुसूचीमे शामिल नहि अछि सेहो सीटेट परीक्षामे शामिल अछि। मुदा मैथिली विषयमे भारत सरकार सीटेट आयोजित नहि करत। कारण मिथिलाक शिक्षित बेरोजगार जे शिक्षक बनबाक लेल तैयार बैसल छथि हुनका लाभ हेतनि। एखनो मिथिलाक छात्रकें नीकसँ अंग्रेजीक ज्ञान नहि छनि आओर दू सय बर्षसँ हिन्दी पढ़लाक बादो अद्यावधि मिथिलाक विद्यार्थीक जीहपर नहि चढ़ि सकल अछि। स,श आओर र,ड़ के उच्चारण निन्यानवे प्रतिशत विद्यार्थी नहि क' पबैत छथि। तखन तँ मातृभाषामे परीक्षा सभसँ सरल उपाय। से सरकार पढ़' नै देत। परीक्षामे शामिल करत नहि। असल मुद्दा से छैक। ई मुद्दा सोझे मिथिलाक शिक्षित बेरोजगार नौजवान सभसँ जुड़ल अछि। तें ई बहुत गंभीर बात अछि। हं,शिक्षा राज्यमंत्री सुभाष सरकार कहलनि बिहारमे वर्ग एकसँ आठ धरि मैथिली पढ़ाइ नहि होइत अछि तें मैथिली विषयमे सीटेट आयोजित नहि कयल जायत।ई बात सत्य अछि आओर बिहार सरकारसँ मिथिलाक लोक लगातार ई माँग क' रहल छथि जे मिथिला क्षेत्रमे वर्ग एक सँ आठ धरि शिक्षाक माध्यम मैथिली राखल जाय।

बिहार सरकार कान बात नहि द' रहल अछि मुद्दा एहि मुद्दाकें बहुत दिन अनठिआयल नहि जा सकैत अछि।हँ,एकटा बातक जनतब दी जे बिहारमे जे शिक्षक पात्रता परीक्षा आयोजित होइत अछि जकरा बीटेट कहल जाइत छैक ताहिमे मैथिली विषय शामिल अछि।से एहि मुद्दाकें जीवन्त राखब आओर मैथिली भाषाक जे संविधान प्रदत्त अधिकार छैक से प्राप्त करब हमरा सभक मौलिक अधिकार आओर अपन नैतिक कर्तव्य सेहो अछि।एहि मुद्दापर किछु मैथिली संस्था बहुत तिखगर प्रतिक्रिया व्यक्त केलक मुदा अधिकांश मैथिली संस्था गुम्मे रहल।

सोशल मीडिया पर जरूर तहलका मचल।से मैथिली सँ सम्बन्धित कोनो मुद्दा हुए दू तीन- दिन चचार्मे रहयै फेर हमसब बिसरि जाइत छी। दोसर-दोसर काजमे बाझि जाइत छी।मुद्दा जस के तस पड़ल रहि जाइत अछि। मैथिलीक शिक्षक ओ साहित्यकारवर्ग मे सँ अधिकांश एहि सबसँ अपनाकें फराक रखने रहैत छथि।हुनका सभक लेल भाषा पर संकट कोनो मुद्दा नहि अछि। साहित्य अकादमीक पुरस्कारक राजनीति पर व्यय कयल जायवला समयक दशांसो यदि भाषाक राजनिति मे लगबतथि तँ सरकार जरूर डोलैत।मुदा बहुत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति अछि जे साहित्यकारक एकटा पैघ पतियानी एहि सभसँ अपनाकें कात रखने छथि। तहिना जिनका कान्हपर एहि समाजक भार छनि जनप्रतिनिधि ओ सामाजिक कार्यकर्ता हुनका सभकें एहन मुद्दापर गराबकोर लागि जाइत छनि, किंकर्तव्यविमूढ़ भ' जाइत छथि। साँप सुंघि जाइत छनि। मातृभाषाक एहन उपेक्षा संसारमे साइते कतहुँ देखल जाइत हो।

हिन्दी पत्रकारिता आओर किछु हिन्दीक साहित्यकार सभकें मैथिली एकदम बर्दाश्त नहि छनि से ओ बेर-बेर मैथिलीक अस्तित्वपर प्रश्न उठबैत रहैत छथि। मैथिलीकें विभिन्न बोलीमे बाँटि क' मैथिलीक अस्तित्व खतम करबाक लगातार षडयंत्र चलैत रहैत अछि। कहु तँ लोक भाषाक बिना हिन्दीक की अस्तित्व रहत? लोक भाषाक उन्नतिएपर हिन्दीक समृद्धि निर्भर अछि। सबटा लोक भाषा समाप्त भ' जायत तँ की हिन्दी बाँचत? किन्हु नै बाँचत। लोकभाषा चाहे ओ मैथिली हो वा संथाली,भोजपुरी,ब्रज होए वा अवधि सभ भाषाक बचब बहुत जरूरी अछि। ओहुना मैथिली आ हिन्दी दुनूक उत्पत्ति भिन्न भाषा परिवारसँ भेल अछि। मैथिलीक उत्पत्ति मागधी अपभ्रंशसँ भेल अछि जाहि समूहमे पाँचटा भाषा शामिल अछि-मगही,मैथिली, बंगला,उड़िया आ असमिया।हिन्दीक उत्पत्ति सौरसेनी अपभ्रंश सँ भेल अछि। फेर भाषा वैज्ञानिक दृष्टिसँ सेहो कियो मैथिली भाषाकें हिन्दीक बोली कोना कहि सकैत अछि। अभिव्यक्ति वा शब्द सामर्थ्यक दृष्टिसँ मैथिली हिन्दीसँ आगाँ अछि।

'ई की कैल, उठा क' ल'आनल
कमलक कोढ़ी लए ढेंङ कोकनल
बेटी कें बेचलहुँ मडुआक दोबर
जनमितहि मारि दितिअइ
नोन चटा क'
कुहरए ने पड़िनइ घेंट कटा क'

ई यात्रीजीक कविता 'बूढ़ वर'क एकटा पद्यखंड थिक। कियो हिन्दी जननिहार बिनु अनुवादकें एहि पद्यक अर्थ बुझि सकैत अछि की? बेर-बेर एहन तरहक विवाद जे उठैत रहैत अछि तकर सबसँ पैघ कारण अछि मैथिल मानसक काहिलपन। भाषा चेतना तँ एतय पहिनहि सँ मृतप्राय अछि। आब समय आबि गेल अछि जे हमसब जागी। हमर पूरखा सभक संग भाषायी राजनीतिज्ञ सभ बहुत अन्याय कयने अछि। कहु तँ कोंकनी,डोगरी ,मणिपुरी ,नेपालीक बाद मैथिली कें स्थान भेटल। हरदम एकेटा बात जे मैथिली हिन्दीक उपभाषा अछि। एकटा विद्यापति कें तँ हिन्दी कें पचायल नहि भेलैक। हजार बर्षक हमर लिखित साहित्य अछि। आओर आब तँ असंख्य कवि ,साहित्यकार छथि। लाखोंक संख्यामे पोथी छपि चुकल अछि। हमरा लग कैकटा समृद्ध शब्दकोश अछि। सैकड़ों पोथीक अनुवाद संसारक अनेक भाषामे भ' चुकल अछि। मैथिलीक अपन भाषा विज्ञान अछि,ध्वनि विज्ञान अछि। फेर हमरा जँ कियो चुनौती दैत अछि तँ हमरा से स्वीकार करय पड़त। अपन मातृभाषाक रक्षार्थ एकजुट होबय पड़त। नेना सबकें मातृभाषामे पढ़बाक अधिकार दियैबाक लेल सब गोटेकें मिलि क' प्रयास करय पड़त। वैश्वीकरण अन्हरमे सभटा नष्ट भेल जा रहल अछि। अंग्रेजी सभ भारतीय भाषाकें घोटि जयबापर विर्त अछि। तेहना परिस्थिति भारतक जे भाषायी विविधता अछि से सहअस्तित्वपर टिकल रहत तकरा बुझय पड़त। एक दोसराक भाषायी अस्मिताकें सम्मान करय पड़त से मैथिली भाषी लोक हिन्दीकें तँ पचाइये लेलनि अछि। जाहि प्रान्तमे जाइत छथि ओतुका भाषाकें पूरा सम्मान दैत छथि। से मैथिली भाषीक दोसर भाषा भाषी सँ ओहने अपेक्षा अछि। मिथिलामे रहनिहार बंगाली, पंजाबी, माड़वारी, सिन्धी आदि दोसर भाषा भाषी तँ मैथिलीकें आत्मसात कयनहि छथि तखन हिन्दीवला सभकें कियैक दिक्कत होइत छनि से नहि जानि। एकटा बात जानि लेल जाय। एतेक घनघोर राजनीतिक षडयंत्र आओर घोर शासकीय उपेक्षाक अक्षैतो जँ मैथिली अद्यावधि बाँचल अछि तँ ओ हमर जिजीविषाक कारण बाँचल अछि। से कतबो कियो उपेक्षा करय हम बाँचल रहब।

पसाही



शिवशंकर श्रीनिवास

मनमोहन पाठक अपन दलान पर बैसल कोनो पोथी पढ़ैत छलाह। दिनक तीनसँ ऊपर गरमी मासक समय रहेक। रौद छलैक, किन्तु एक दिन पहिनहि बर्खा भेल रहे ते ठंढाउन समय लगे छलै।

तखनहि हुनका दलानक आगू कोनो आहट बुझेलनि आ ओ अपन मूडी उठाकें तकलनि- 'अरे, नूरो दीदी।' नूरजहाँ सत्तारक बेटी छलि। सत्तार हिनक पिताक बालपनक संगी रहथिन आ ओ अपन अन्तिम काल तक तकरा निमाहलनि, हिनक पिता सेहो बड़ संग देने छलयिन नूरजहाँ हिनकास थोड़े जेठ आ ई सभ दिन अपन सत्तार चच्चाक बेटीक 'नूरो दीदी' कहलथिन गामक उच्च विद्यालयसँ दस साल पहिने अवकाश ग्रहण कयलनि अछि। एहि इलाकामे नीक विद्वानमे गिनती छनि पढ़यो दिनमे खूब तेज छलाह। एहि गामक बहुतो हिनक विद्यार्थी रहलए सम हिनका गुरुवत सम्मान दैत छनि।

नूरो दीदी सभ दिन हिनका छोट भाइक स्नेह दैत रहलि। राखी बन्हैत रहलि, वएह नूरो दीदी दलानक बाहर ठाढ़ि छलि।

पाठक जी पुन: पुछलथिन- 'की बात है नूरो दीदी ?? -नै बौआ, हम नूरो दीदी नहि, आब हम मुसलमाइन छी।' ओ
उदास स्वरमे बाजलि।

-'एना किए बजै छे ??

-बौआ, पहिने हम एहि गामक बेटी रही, ककरो दीदी, ककरो मौसी, मुदा सभ किछु... ' कहि कान लागलि।

चौंकलाह पाठक जी। उठिका ठाढ़ भेलाह आ पुछलनि- 'कहबो त करवें जे की भेलौए?

-'बहुत किछु भेलए। अच्छा ई कहरू बौआ, दिल्लीक ओ जमाती सभ, हमर के लागत? ओ सभ ई कोरोना बेमारी फैलेलक तइमे हमर कोन दोख?'

-'ई रोग कोनो जमातिये दुआरे थोड़े भेलैए, एकर बहुतो कारण
छै। मुदा तोरा की भेलौ?' पाठक जी कहलनि।

'- 'तो' इहो कहा जे कोनो हिन्नू जैं कोनो मुसलमानक मारि देलकै, तइमे दोसर हिन्नूक कोन दोख?' -'केवल प्रश्ने पुछवें कि बातो कहवें जे एहि सभसँ की भेलहु ?
के की कहलकी ?'

-दाहुर दासक बेटा आइ दू-तीन दिनसँ हमरा कहैए जे ई गाम हिन्दूक गाम छियै। तो एहि गामसँ भाग तोरे जातिक कारणें ई बेमारी पसरलैए। हम गपके हँसीमे ली। आइ भोर-भोर गारि पढ़िकर कहलक जे नै भगवें तँ भकसी-झोंकि मारबी की कहियऽ ई नान्हिटा बण्ठा जतेकटा हमर पोता अइ, ओ तकर बाद की ने कहलक। हमहूँ कहलियै। ओ त भल होअय सरयुग यादवकें, जे बीचमे ठाढ़ भेल। आइ जैं हमरो बेटा-पोता गाममे रहितय तर की ने की भऽ जइतै से तौं कहरु, की हम एहि गामसँ भागि जाउ? की ई हमर गाम नहि छी? गामो हिन्नू-मुसलमान होइ छै?? कहि कानऽ लागलि नूरो।

- 'के भगेतौ तोरा?? पाठक जी कहलनि।

-नै, हम एकघरा छी ने?? नूरो पुन: कानिकऽ बाजलि।

-ई पूरा समाज सभ जातिक, सभ धर्मक है। कियो ने भगा सकै छौ तोरा, फेर हम सभ एहि गाममे की करै छिये?'

-से तऽ कते गोटय तखनहि बण्ठाकें कहलकै, मुदा की कहिया बौजा, बुढ़बा त आब बेसी नहि सकै छै, मुदा किछु तरकारी-तीमन लगा लै छँ से आब झिमनी आ परोड़ फरब शुरू भेलैए से ओहि टोलमे केओ नै लै है। तखन कहरू जे तरकारियो हिन्नू-मुसलमान होइ छै?'

-'तखन की करै छीही तरकारी ?? -साँझ पड़े है त२ फोचन दासके द अबै छियै। ओ दाम खसाकें ले है। की करते ओ ओकरो त नफ्फा चाही।' नूरो बाजलि।

-'ठीक छै नूरो दीदी। हम तोहर छोट भाइ छियौ। हम गाममे रहब त तोहूँ रहवें चिन्ता नहि कर अबै छियौ। हमरो लेल थोड़े परोड़ रखिहें। पाठक जी ओकरा भरोस दैत कहलनि।

-'ठीक छै! आवह, चारि बजे बैसारी है ओतै महावीर थानमे। हम
ओतहि तोहर बाटा तकव... कहि विदा भेलि नूरो।

नूरो तऽ गेलि, मुदा मनमोहन पाठक बहुत चिन्तित भऽ गेल हिनका मोन पड़लनि सत्तार चच्चा नूरोक पिता बहुत नीक छलाह।
लोक। ओ हिनक पिता संगे पढ़नहुँ छलाह। दुनूमे बहुत प्रेम रहनि। ओ शाकाहारी छलाह किन्तु हिनक पिता माछ खाइ छलाह। हिनक पिता कहथिन- सत्तार, तों पूर्व जन्म ब्राह्मण छलें। सेहो मिथिला-बंगालक नहि, आन क्षेत्रक, जत लोक माछ नहि खाइए।' सत्तार चच्चाक बड़ आदर करथिन हिनक पिता हिनका सम
बहिनकें अपन पित्तीसँ बेसी सत्तारे चच्चासँ स्नेह भेटल छनि। हिनका लेल ओ नारियल वला चॉकलेट जरूर अनथिन। हिनका रंग-बिरंगक खिस्सा सुनबथिन।

हिनका गाममे एक्केटा मुसलमानक घर। लोक कहे जे एकर एकपीढ़िया वंश छै। सभ पुरुषामे एक्केटाक बेटा, किन्तु सत्तार चच्चा
बेटा नहि मात्र एकटा बेटी, इएह नूरो। नूरोक विवाह बड़ कठिनसँ कटमा गाम भेल रहे, कारण सत्तार मियाँक शर्त रहे जे नूरोक वडरक घरजमैया भऽ कऽ रहऽ पड़तै। से अन्तमे भेलै। ओकरा नूरोक पति इदरीश बहुत मिलनसार आ काजुल भरि गामक लोक पहुना मियाँ कहै छै। नूरोक ओहिठाम दाहा बने। से कहाँदन पहिने एकर पर बाबा आ कि बाबा दाहा एहि कारणे नहि बनवै जे ओ असगरे रहय। किन्तु, एहि गामक समाज जोर मारलकै नहि सभ गामक मुसलमान दाहा बनवैए तो किएक ने बनेवें आ सभक सहयोगसँ बन लगलै। हेमनि घरि बनै छलै नहि जानि एहि बीच की भेलै? बन्न भा गेले।

किछु दिन पहिनेक बात छिये ई नूरो दीदीसें पुछलथिन आँव गै नूरो दीदी, तोहर दुनू बेटा-पुतोहू त२ मुम्बइये रहे छौ?' -'हैं, ओते रहे है, वएह सालमे बेरा-बेरी गाम अबे है। आब त दूटा पोतो नोकरी करैए। ओकरो शादी करेबाक है।' -'आ जॅ ओतै कड़ ली।

- 'से कड़ लेतै तऽ नीक, मुदा नै करते आ एहिठाम बड़का बखेरा
कहै छे।'

-'की?'

-'आन गामक मुसलमान कहै छे, जे तो ओत एकघरा है। ओ हिन्दूक गाम छियै, ओत हम अपन बेटीक शादी कोना करायब? ओ सम की जान गेलै जे हम एतऽ कोना भाइ-बहिन भऽ कऽ रहे छिये।' नूरो दीदी गर्वस कहने रहे। से सोचैत मनमोहन पाठककें भेलनि जे आइ नूरोक एहि गर्व पर चोट पड़लैए। तें ओ एतेक दुखी छलि। नहि रहल भेलनि मनमोहन पाठककें आ घर आबि कुर्ता पहीरि
विदा भेलाह त२ पत्नी पुछलथिन- 'कत' जाइ छियै?

पाठक जी पत्नीकें नूरोक सभटा खेरहा सुना देलथिन गप सुनि पत्नी कहलथिन- 'एहन बात एहि कारणे थोड़े भेलै जे ओ मुसलमान छी? हमरा नैहरक नेडर चौधरीक बेटीक सासुरक परिवार सेहो अपन गाममे एकघरा छलै। ओकरा ततेक कयलकै जे उपटिका दोसर गाम आबि बस पड़लै।'

-'अरे, से हमरा नहि बुझल छल। के? ओ, जकर सासुर बलाट
रहे? स्कूलमे -'हैं, हैं! एक बेर त आयल रहय ककरो नाम लिखाबड़ अहाँक -'ओ सभ कतऽ गेले

-'ओतहि कोनो गाम छै, जत ओकर वडरक मातृक छलै। पत्नीक गप सुनि गुम्म भऽ गेला पाठक जी मनमे भेलनि जे सामाजिक सद्भावक बीच ई स्वार्थी राजनीतिक पार्टी सभ तेना ने जाति आ धर्मक बीच द्वेषक पसाही लगा देलकैए जे सौहार्द्र भावकें जरा रहलैए। बन्धुत्व भाव भस्म भऽ रहलैए। एकहि धर्मक जातिक बीच जहिना ई पसाही लागल है तहिना एक धर्म ओ दोसर धर्मक बीच। आखिर ई समाज कोना बचत? के बचेत? एहि आगिक मिझेबाक लेल फेर एकटा युद्ध लड्ड पड़ते। से जेना निश्चित लड़ पड़तै... । इएह सभ सोचैत मनमोहन पाठक ओत पहुँचलाह। -
ओहि ठाम महावीर-थानमे पंचती भऽ रहल छलैक। से भ'ओ गेल छल सभ आब हिनके बाट तर्क छल जे मास्टर साहेब औताह त सुखद बात सुनेवनि।

ओहिठाम जखन ई पहुंचलाह त सभ ठाढ़ भऽ गेल, मुदा ई सभके बैसबैत कहलथिन- 'अहाँ सभ बैसे जाइ जाउ, मानल जे एहिठाम जतेक गोटय छी प्राय: सभ गोटय हमर छात्र रहल छी किन्तु एखन एहि महामारी कोरोनाक समय प्रणाम-पाती हाये जोड़िक होअय
सभ हँसय लागल। सभ हाथ जोड़ि मास्टर मनमोहन पाठककें प्रणाम कएलक। सभकें आशीर्वाद देत पाठक जी कहलनि- 'अहाँ सभ हमरे जकाँ गमछासँ मुँह बन्हने छी आ दूरी बनाकड़ बैसल छी, आनन्द भेल जे एहि गामक लोकमे कतेक नीक विचार भऽ गेल है।'

सभ मास्टर साहेबक गप्प सुनि हाथ जोड़ि हँसउ लागल किन्तु मास्टर साहेब कहलनि- 'की कहू हम, आइ नूरो दीदीक संग जे भेलैए ताहि लऽ कऽ बहुत दुखी छी। एहि परोपट्टामे हमर गामक सामाजिक प्रेम-भावक चर्चा होइ छल। हमर गाम कएक रूपमे आदर्श गाम अछि। ताहि ठाम एहन बात हमरा दुखी कयलक।

हिनक गप सुनि हीरालाल कामति ठाढ़ भेलाह। ओ एहि गामक सरपंच सेहो छलाह। ओ हाथ जोड़ि कहलनि- 'श्रीमान! हम अपनेक विद्यार्थी छी। सरयुगे यादव ई पंचैती बैसेलनिहें, नूरो दीदी नहि आ बुझू सरयुग यादव संगे ई पंचती हम बैसेलहुँ अछि।

-'की मेले पंचैतीमे?' मास्टर साहेब पुछलनि।

-'नूरो पहिने हमरा सभक दीदी छी। बण्ठा एकरा गारि पढ़ि सम्पूर्ण गामक चूनौती देलकए तें बण्ठा पहिने नूरो दीदीसँ क्षमा मंगलकैए आ तकर बाद एकरा पाँच हजार दण्ड कयल गेलै, मुदा बण्ठाक बदला नूरो दीदीये कानऽ लागलि जे, 'माफ कर दिऔ, ओ हमर सन्तान छी। कहैत हीरालाल द्रवित भऽ गेल।

गप सुनि बहुत आनन्द भेलनि मास्टर मनमोहन पाठककें। सभकें धन्यवाद आ आशीर्वाद देलनि आ नूरो दीदीके कहलनि- 'की नूरो दीदी?' दीदी हँसड लागलि।

तीन दिनक बाद ई अपन दलान बला कोठरीमे किछु करै छलाह तखने बाहरस नूरोक हाक सुनेलनि, बहरेला- 'की नूरो दीदी - 'बौजा, लएह ई तोहर पहुना मियाँ तोरा लेल थोड़े परोड़ देलक हए।'

-'वाह! कते छौ?'

-'जोखने नै छियै आ जोखबो काज नै छै। हम थोड़े देलिय-हे,
तोहर पहुना मियाँक सनेस छियह?' -'ठीक छौ, बैस।'

-'हैं, बौआ बैसे छी।' ओ दलान पर नीचे सीमेंटक झाड़ि वैसि

-'ओहि बेंच पर बैस ने।'
गेलि। -नहि, ठीके छी। एकटा गप कहा अयलि-हए।' नूरो बिहुँसैत

-'की' कह ने।'
बाजलि।

-'आब लएह अपन गाम। आब हम तोरा गाममे नै रहवह। बेटीक असली गाम तऽ ओकर सासुर होइ है। ओत हमर डीह अइ ओतै घर बनायब एहि ठामक सम किछु बेचि-बाचि लेब।' कहि फेर बिहुँस लागलि।

मनमोहन पाठककें मोनमे भेलनि जे एतेक पैध गप कहैत नूरो बिहुँसैत अछि किएक? पुछलनि किए, फेर केओ किछु कहलकौए?' - की कहिय, परसू हम बजलियै जे आब जे होउ, ई काल समय
बीते है त हम एहिठामक सभ किछु बेचि-बाचि सासुर चल जायब। तखनसें कहै छियह, साँझ-भिनसर घरोहि लागि गेलैक लोकक, जे हम अपन सभ सम्पति ओकरा द दिऔ तऽ ओकरा द दिऔ सभ एक-दोसराक खिघांश करत हमरासँ अपनैती बना रहलए। ओ बण्ठा जे गारि पढ़ने छल से अपन घट्टी मानैत कते बेर आयल एखन दीदी कहैत ओकर मुँह टुटै है। अपन गप नूरो सभटा सहज भेलि कहि गेलि।

-'तों की कहलीही?'

-'ही बौआ, हम कहूँ जाइ, हम लोकक नेत देखलियैए। सभक मोनक थाह लेलिये। ही कोनो जाति-धर्म नै, सम्पतिक आगू कथूक मोल नै।

-'त फेर एतसँ जाइके नाम नहि ले। कहि गेलाह मनमोहन
पाठक। मनमे सोचलनि जे एखन ई नूरो दीदी जे कहय, मुदा एहि
ट्ठ जाति-धर्मक जेना चारू भर द्वेषक पसाही लागल है ओ जैं नहि मिझायल जायत त एहि धरतीक हरियरी नष्ट भ जेतै। ई गुम्म भेल सोचि रहल छलाह। हिनक मोन जेना ओहि दिशामे उठि गेल छलनि।

- 'की सोच लगलर बौआ? हम कती जाइ हमर अब्बाक डीह पर ककरो हर कोना जोत२ देवै। मारि दे। मरवै। आ एतै रहबै आ फेर एखनहुँ तोरा सभ सन, सरपंच आ सरयुग यादव सन लोक छ एहि गाममे।' नूरो कहि हिनका दिश ताकऽ लागलि।

जेना मनमोहन पाठककें नूरोक गपसँ ध्यान दुटलनि, बजलाह 'हैं दीदी, कतौ जेबाक काज नहि छै। पहिने जो कल पर, साबनुस हाथ-पएर घो आ बैसि क' चाह पी। कहि आनन्दक टोनमे पत्नीकें सोर करैत कहलनि- 'हमरा आ नूरो दीदीकें चाह पीआउ।'



रेखांकन साभार : अपाला वत्स



रत्नेश्वर झा द्वारा जन्तर-मंतर पर शिक्षा राज्यमंत्री द्वारा मैथिली कें हिन्दीक उपभाषा कहबाक विरोध मे 18 सँ 20 फरवरी धरि तीन दिवसीय धरना।

लोकाचार मैथिली लोकगीत, भोजन आ नारी असमानता



डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

लोकगीत समाजक दर्पण अछि। नारी मनोदशा केर चित्रण लोक गीत केर माध्यम सँ अहि लेल जरूरी अछि जे अपन भाव, दर्द, प्रेम, स्वतंत्रता, मनोद्वेग, सौंदर्य केर अनेक स्वरूप मैथिलानी एहि माध्यम सँ अदौं स' करैत आबि रहल छथि। गीत गेबाक लेल हिनका हेतु कोनो विशेष क्षण नहि छनि। हरेक क्रिया कलाप मे ई गीत गबैत छथि। काज मे गीतक संग ततेक रसिया जैत छथि जे काज कखन पूरा भ' जैत छनि से पते नहि चलैत छनि। काजक अधिकता गीत गेबाक, गीत मे संग देबाक आ गीत सुनबाक प्रवृत्ति के कम नहि करैत छनि। ओ सब अव्यक्त भाव जे कोनो कारणे आन ठाम व्यक्त नहि क' पबैत छथि से गीतक सहारे व्यक्त क' लैत छथि। गभार्दान सँ ल' क' मृत्यु धरि गीत गेबाक आ सुनबाक परंपरा रहल अछि। गीत देवताक पूजा करक, मनेबाक साधन, विध वेभारक गाइडलाइन्स बनि जैत छैक; समयक साक्षी भ' जैत छैक; श्रृंगार व्यक्त करक हथियार बनि जैत छैक। गीत बर कनिया के प्रेम, सौंदर्य, रतिक्रिया मे सहायक बनि हनीमून केर व्योंत; स्त्री-पुरुख के आपसी मिलन केर आधार आ बुढक अंत समय के भजन के रूप मे जीबाक आ मृत्यु के सहजता सँ स्वीकार करबाक साधन छैक। गीत दैनिक जीवनक काज- रोपनी, कमौनी, कुटान, पिसान, अरिपन, कोहबर, चित्र कला के प्रयोग मे लयात्मकता आनि दैत छैक। गीत धरती, नदी, पोखरि, गाछ, बृक्ष, चिरै, चुनमुन, संगे मनुखक प्रेम आ एक दोसरक प्रति परस्पर सहयोगक भान; बिदेसिया पति के बिरहिनी लेल दोसरातिक काज करैत छैक। गीत गर्भवती महिला के मोन बहलबैत ओकरा बच्चा के छवि के दर्शनक आधार छैक। गीत एक विधवा के बचल जिनगी काटक तंत्र छैक। गीत सर्वश्रेस्ठ कला छैक, गरीबी, दु:ख, बिछोह आदिक सहन केर साधन छैक; प्रेम, अनुराग छैक, नवरस के सब रस सँ लबालब भरल छैक। गीत सँ मनुख आ जहान छैक।

लोकगीत महिला सबहक त' ब्लैक बोर्ड अछि। ई महिलाक दुनिया, पोथी, कैनवास, आ संसार अछि। एकर गंभीर विवचन करब त' लागत जे लोकगीतक भंडार इहो बतबैत अछि जे कोना परंपरा के नाम पर मैथिलानिक शोषण आ दोहन होइत रहल अछि। कोना पुरुष केर व्यवस्था महिलाक दुरुपयोग क' रहल अछि; कोना हिनका सबके सब किछु लेल बंचित केने अछि। गीतमे निर्धनता कें चित्रण करैत कोना कियोक महिला कम भोजन अथवा कुअन्न खा क' दिन खेपैत छथि तकर मर्मस्पर्शी वर्णन कैल गेल अछि। आईसँ करीब 30-35 सालक इतिहासमे अगर जा सकी आ अपन मानसपटल पर ओहि स्थिति आ गरीबी कें ऐनाँ के रिफ्लेकशन जेकाँ देख पाबी त' सहज रूपमे ई अनुमान लगा सकैत छी। एकटा बारहमासा एहेन भेटल जाहिमे एकटा निर्धन महिला जिनकर पति परदेस गेल छथिन, कोन धरानी अपन समय नितांत निर्धनतामे बिता रहल छथि तकर विवरण देल गेल अछि:

पूस गोइठा डाहि तापब
माघ खेसारिक साग यो
फागुन हुनका छिमरि माकरि
चैत खेसारीक दालि यो
बैशाख टिकुला सोहि राखब
जेठ खेरहिक भात यो
अखाढ़ गाड़ा गाड़ि खायब
साओन कटहर कोब यो
भादव हुनको आंठी पखुआ
आसिन मडुआक रोटी यो
कातिक दुख-सुख संगहि खेपब
अगहन दुनू सांझ भात यो

उपरोक्त गीतमे कोना एक महिला खेसारीक साग, खेसारीक दालि आमक टिकुला, खेरहिक उसिना, पाकल आमक गाड़ा, कटहरक कोआ, नेढा, आमक पखुआ, मडुआ रोटी, एक मास अनिश्चितता केर स्थिति आ अंतत: अगहनमे भात। कहू त' कतेक सत्यकें जे आई लगभग इतिहास भ' चुकल अछि तकरा ई अपना मानसमे रखने अछि मिथिलाक गीत-नाद। पुरुष लेल स्त्रीगन नाना तरहक भोजन विन्यास करैत छथि। जमाय, समधि आदि लेल सचार लगैत अछि। मुदा स्त्रीगन लेल किछु नहि। पुतहु के एलाक बाद ओहेन सचार कथी लेल नहि? एकर उत्तर नहि अछि। शायद स्त्रीगन पुरुखक दासी बनि सेवा लेल बनल छथि! एहेने मानसिकता अछि। एक उचती गीतमे जखन विवाहक बाद वर भोजन करवा लेल बैसैत छथि त' सासु आ आन स्त्रीगन सब अपन गीतमे व्यंजन केर वर्णन करैत छथि:

जाहि दिन राम जनकपुर अयला देखहु दुनिया के लोके
भाति-भाति के भोज्य लगाओल नयना बिनु परकारे जी
केरा नारियल खण्ड सोहारी परबल केर तरकारी जी
जीमय बैसला ओ चारू भाई परसथु प्रेम पीयारी जी

एहेन व्यंजन महिला लेल नहि भेटैत अछि। एक मात्र व्यवहार गर्भवती भेला पर खीर आ सासुर जेबा सँ पहिने खाएकके अछि। समाजशास्त्रीय विवेचना सँ पता चलत जे ओ लड़की आब अपन नैहरके सदाक हेतु त्यागि रहल अछि ताहि ओकरा प्रति स्त्रीगण समाज अंतिम कर्मक निर्वहन करैत अछि। एहि





बिछुरन मे प्रेमक नोर कहाँ अहि मे त मृत्युक वेदना छैक! बेचारी लड़की खैएत कम आ कनैत अधिक अछि। लोकगीत के देखला सँ आ शब्द केर खोइंठा ओदारला सँ ई लागत जेना स्त्रीगन के काज निक वस्तु पुरुष लेल बनेबाक छनि। खेबाक काल अंत मे जे बांचल-खोंचल रहि गेल वैह ग्रहण करती। सैह हालत कामो बेश घरक बेटी सबहक छनि। आंठि खेनाई लड़की आ सोहागिन स्त्री सब लेल सोहाग-भाग मानल जैत छल। बहुतो ठाम ई परंपरा एखनो अछि। एक गीत मे एक एहेन नवकनिया जे कनि ताम-झाम वाली छैथ तिनका पर कटाक्ष कैल गेल छनि। हरेक चीज भोजन स पहिरन धरि मे नखरा छनि तकर अलगे बात! मूह-कान निक नहि मुदा घमंड विश्वसुन्दरी के, मुह कौआ सनहक:

कौआ सनहक कारी आ बाकूला सनहक ठोर
बैसल-बैसल चाही हिनका दाली भात तिलकोर
हमही सबस सुन्नरि छी आ हमरे सुन्नर दूल्हा
सासु कियैक नहि भानस करती नहि फूकब हम चुलहा

अहि सँ अतेक स्पष्ट तऽ भऽ जैत अछि जे व्यंजन पर स्त्रीगन के अधिकार नहि। ई पुरुषक वस्तु थिक। भोजन सामग्री खेबाक बात त नहि परंतु एक आध सोहर एहेन जरूर भेटल जाहि मे गर्भवती महिला के कोन मास मे कोन तरहक भोज्य सामग्री सँ अरुचि भऽ जाइत छनि:

पहिल मास चढु अगहन देवकी गरभ सँ रे।
ललना रे मुंगक दालि ने सोहाय केहेन गरभ सँ रे।
दोसर मास चढु पूस देवकी गरभ सँ रे ।
ललना रे पूसक माछी ने सोहाय कि देवकी गरभ सँ रे
ललना रे तेसर मास चढु माघ देवकी गरभ सँ रे
ललना रे पौरल खीर ने सोहाय कि केहेन गरभ सँ रे
चारिम मास चढु फागुन देवकी गरभ सँ रे
ललना रे फगुआक पूजा ने सोहाय कि देवकी गरभ सँओ रे
पाचम मास चढु चैत देवकी गरभ सँओ रे
ललना रे चैत के माछ ने सोहाय कि केहेन गरभ सँओ रे
छठम मास चढु बैसाख देवकी गरभ सँओ रे
ललना रे आम के टिकोला ने सोहाय कि केहेन गरभ सँओ रे
सातम मास चढु जेठ देवकी गरभ सँओ रे
ललना रे खुजल केश ने सोहाय कि केहेन गरभ सँओ रे
आठम मास चढु अखाढ़ देवकी गरभ सँओ रे
ललना रे पाकल आम ने सोहाय कि केहेन गरभ सँओ रे
नवम मास चढु सावन देवकी गरभ सँओ रे
ललना रे पिया के सेज ने सोहाय कि केहेन गरभ सँओ रे
दसम मास चढु भादव कि देवकी गरभ सँओ रे
ललना रे देवकी दर्दे ब्याकुल बाजायेब रे

भोजन विन्यास आ नारी मनोदशा के चर्च करैत एक सोहर जँ देखी तऽ पता लागत जे बेटी जन्म पर कोन तरहक व्यवहार महिला संग होइत छनि:

चैत बैसाखकें पुरइनी पुरइनी थइर लहर मारू रे
ललना रे ताहि तर बेटी जनम लेल पुरुख बेपक्ष भेल रे
कथीए ओढ़न कथीए पहिरन कथीए पथ भोजन रे
ललना रे कथीए जरायब सोइरी घर पुरुख बेपक्ष भेल रे
गुदडी ओढन गुदडी पहिरन कोदो पथ भोजन रे
ललना रे कडरी जरायब सोइरी घर पुरुष बेपक्ष भेल रे
चैत बैसाखकें पुरइनी पुरइनी थइर लहर मारू रे
ललना रे ताहि तर होरिला जनम लेल पुरुख अपन भेल रे
लाले ओढन लाले पहिरन सारिल पथ-भोजन रे
ललना रे चानन जरायब सोइरी घर पुरुख अपन भेल रे

मनोदशा ई जे बेटी भेल तऽ पुरख बेपक्ष भऽ जेताह। कुनो तरहक सुविधा सँ वंचित भ जैब। ने पथ्य-पानि ढंग सँ भेटत, ने वस्त्र, ने दवा-दारू। एकर विपरीत अगर बेटा भ' गेल त' पुरुख अप्पन या ई कही जे सहयोगी भ' जेताह, निक पदार्थ भोजन, निक वस्त्र, उत्तम व्यवस्था, उचित औषधि, सब किछु प्राप्त हैत।

मैथिल समाजक जरल 'खकसियाह' दाग कहिया चिक्कन हेतै...



प्रवीण झा

अंतिका प्रकाशन सँ छपल गौरीनाथक कथा संग्रह खकसियाह अहिना हथौरिया मारैत सात समंदर पार किंडल पर हाथ लागि गेल। हम ट्विटर पर पूछलियनि- 'खकसियाह माने ऐश-ब्लैक?' कतेक शब्द सभ अहिना मोन से उतरल चल जा रहल अछि वा घर में दू परानी बजय में कम उपयोग करैत छी- अधक्की, अरुआयल, खरपा, पौड़की, असोथकित, आ तहिना खकसियाह। अहि पोथीक मादे कतेक एहेन बिसरल शब्द मोन पड़ल। अहि पोथी में दस टा कथा अछि, आ कम स कम ओहि धरातल पर मिथिला आ पच्छिमक दुनिया एक भेल जा रहल अछि। विवाहेत्तर प्रेम वा अपना सँ अधबयसु स्त्री से प्रेम, आन जाति-धरम में प्रेम, विधवा-सधवा सँ प्रेम। एहन धरातल पर राजकमल चौधरी जी आ अन्य कथाकार सभ अवश्य उतरल छथि, हमरा ओतेक पढ़ल नहि अछि मुदा नीरजा रेणु जी के किछ खिस्सा सभ मोन पड़ि रहल अछि। बहुत तरहक द्वंद्व सँ जे मैथिले नहि दुनिया भरि के समाज अपन-अपन परिधि मे जे ऊब-डूब करैत रहति अछि, ओकर छाप गौरीनाथक एहि कथा संग्रहक कथा सभ मे भेटत। कथाक सृजन के एकटा उत्स तकंफ्लिक्ट मानले जाइत छैक। ओकर अद्भुत उदाहरण अछि ई पोथीक एकटा कथा- 'कुपुत्रोवाच'। ओहि में पिताक नाम एकटा चिट्ठी लिखल छहि, जेकरा पढ़ि क कखनो हँसियो आबे कियैक तबहुत रिलेटेबल लिखल छहि। बड़का बड़का प्रगतिवादी कोना अपन बेर में सटकि जाइत छथि, ताहि पर कटाक्ष करैत ओकरा एकटा दिशा देल गेल छैक। हमर मोन कें पहिल खिस्सा 'तर्पण' कने खोचारलक, कियैक तओहि में एकटा प्रवासी डॉक्टर एकसरु स्त्री छथि जे हमर बयस से किछु कम हेती वा एकबयसु हेती। ओ अपन पितामह कारी यादव के खेत-पथार देखइ लेल पूना से नियमित गाम अबैत छथि आ हुनका मोन में कोन-कोन द्वंद्व होइत छनि, कोना ओकरा सँ टैकल करैत छथि। अखनि के समय में जखनि गामक दशा-दिशा अपन गति से आ शहरी ढीब-ढाब अपन गति सँ बदलि रहल अछि, प्रेम के खाँच सभ भिन्न अछि, तखनि अहाँ कोना ओहि में अपना के देखै छियहि; से ई पोथी किछ बन्न खिड़की सभ खोलत।

भूमिका में तारानंद वियोगी जी एक पाँती में लिखैत छथिन- 'मिथिला दिस सँ गेल पाहुन जखन दिल्लीक वजीरपुर कि सीलमपुर के झुग्गी इलाका मे विराट चतरल मैथिल समाज देखैत अछि तँ चकबिदोर लगैत छनि जे एहन तँ दरभंगा मधुबनी में मैथिलीक चला चलइत नई अछि आ ने एहि तरहक हिलल-मिलल समाजह्व। अहि में जे दू टा मिथिला के गप्प छै, इहो एकटा कंफ्लिक्टे भेलै। समाज के दोग सभ में जरल खकसियाह दाग सभके रगड़ि के चिक्कन करैक प्रयास होइत रहय, सैह ई



आब सहरसा स' गुवाहटी वाया दरभंगा जायब भेल संभव

रोशन कुमार झा

वर्ष 1934 मे आयल प्रलयकारी भूकंप मे मिथिला कें बहुत बेसी नोकसान उठाबय पड़ल छल। लोकक जान-माल केर क्षति केर संगहि कतेको प्राचीन धरोहर सभकें सेहो बहुत बेसी नोकसान पहुंचल। एतबी नहि, भूकंप सं मिथिला सेहो दू भाग मे बंटि गेल। ओ एना कि कोसी नदी पर बनल रेल पुल रिक्टर स्केल पर 8 केर तीव्रता सं आयल भूकंप सं पूर्ण रूपेण ध्वस्त भ' गेल। कोसी पर पुल टुटला सं मिथिला दू भाग मे बंटि गेल। नतीजा भेल कि दरभंगा-मधुबनी केर संपर्क सहरसा-सुपौल आ कि पूर्णियां-भागलपुर सं कटि गेल। दरिभंगा-मधुबनी रेल रूट केर सभसं अंतिम रेलवे स्टेशन निर्मली सं सरायगढ़ जयबा मे महज 20-25 मिनट लागैत छल। ई दूरी बढ़ि कय 300 किलोमीटर भ' गेल। एकरा चलते दुनू दिसका लोकक बीच आन-जान प्रभावित भेल जकर असर आपसी रिश्ता पर सेहो पड़ल। खासकय दुनू दिसक लोकक बीच विवाह संबंध लगभग खत्म भ' गेल।

ओना तकरीबन 10 साल पहिने ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर हाईवे बनला केर बाद मिथिलाक ई दुनू हिस्सा फेर सं एक भ' चुकल अछि। मुदा आब 88 साल बाद रेल परिचालन सेहो शुरू होमय जा रहल अछि जाहि सं ई दूरी आर कम भ' जैत। एहि पुल के बनि गेला सं दरभंगा प्रमंडल के करीब 1.27 करोड़ आ कोसी प्रमंडल केर 1.21 करोड़ लोक कें फायदा है त। एक बात आर, एहि रेल पुल सं केवल मिथिले केर लोककें फायदा नहि हेतैन।


कोसी रेल महासेतु पर रेल परिचालन शुरू भ गेल अछि।

जं कनेक विस्ताररूपेण देखी त' एकरा सं बिहारक अलावा नॉर्थ ईस्ट के राज्य बंगाल, असम, अरुणाचल आ किछु दोसर राज्य कें सेहो फायदा भेटत। उदाहरण केर रूप मे कही त' दिल्ली सं गुवाहाटी केर सफर करीब चारि-पांच घंटा कम भ' जैत। जाहि ट्रेन कें एखन दिल्ली सं गुवाहाटी लेल पटना केर बाद बरौनी, बेगूसराय, कटिहार आ बंगाल घूमि कें जाय पड़ैत अछि ओ सीधे समस्तीपुर सं दरिभंगा, झंझारपुर होइत गुवाहाटी निकलि जैत। तें ई कहबा मे कोनो हिचक नहि जे एहि रेल पुल केर इंतजार केवल मिथिले केर लोक कें नहि बल्कि नॉर्थ ईस्ट केर किछु राज्य कें सेहो अछि। ओना एकरा सं मिथिला मे रेल नेटवर्क केर विस्तार सेहो हैत आ दिल्ली सं नॉर्थ ईस्ट राज्य केर लेल ई प्रमुख रेल लाइन भ' जैत। आब बात करैत छी जे कि अछि एकर वर्तमान स्थिति आ कहिया धरि अछि शुरू होयबाक अनुमान। 6 जून 2003 कें तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी कोसी नदी पर बनल ईस्ट-वेस्ट कॉरिडोर पुल केर समानांतर रेल पुलक आधारशिला राखने छलाह।

शुरूआत मे त' काज मंथर गति सं चलल मुदा बाद मे रफ्तार पकड़लक आ आब ई पूर्णरूपेण बनि कें तैयार अछि। एकरा पर रेल परिचालन सेहो शुरू भ' गेल अछि जकर उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सितंबर 2020 मे विडियो कॉन्फ्रेंसिंग केर माध्यम सं कयलनि। वर्ष 2016 मे निर्मली सं सकरी लाइन पर लेल गेल मेगा ब्लॉक के बाद आब एखन स्थिति ई अछि जे दरिभंगा सं झंझारपुर धरि आ ओम्हर सहरसा सं कुपहा तक रेल परिचालन भ' रहल अछि। दरिभंगा सं झंझारपुर के बीच एखन मात्र एक जोड़ी सवारी गाड़ी केर परिचालन भ' रहल अछि। कुपहा सं निर्मली धरि सेहो सीआरएस निरिक्षण भ' चुकल अछि आ जं सभ किछु ठीक-ठाक रहल त' अहि महीना केर अंत धरि रेल परिचालन शुरू भ' जैत। मतलब ट्रेन सहरसा सं निर्मली धरि आबि जैत।

एम्हर झंझारपुर सं निर्मली धरि रेल लाइन सेहो बनि कें तैयार अछि। तमुरिया तक त' ट्रेन केर ट्रायल रन सेहो शुरू भ' चुकल अछि। घोंघरडीहा आ निर्मली केर बीच सेहो काज लगभग पूरा भ' चुकल अछि। उम्मीद अछि कि अगिला महीना केर अंत धरि दरिभंगा सं निर्मली तक गाड़ी पहुंचि जैत। मतलब अप्रैल मे एहि रेल मार्ग पर दरिभंगा सं सहरसा तक रेल परिचालन शुरू भ' जैत जकरा बाद हम कहि सकैत छी जे मिथिलांचल आ सीमांचल फेर सं एक भ' जैत। मतलब दुनू दिसका लोकक 88 सालक बहुप्रतिक्षित इंतजार खत्म भ' जैत। दू साल पहिने दरिभंगा एयरपोर्ट शुरू भेला केर बाद यातायात केर क्षेत्र मे मिथिला के लेल ई एकटा बहुत पैघ सौगात है त।

'हिन्दीक अखबार सभ बांटि रहल अछि मिथिला कें'

मधुबनी मे आयोजित भेल 'मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समिति'क चौदहम स्थापना दिवस

मधुबनी। मैथिली साहित्यिक एवं सांस्कृतिक समितिक तत्वाधान मे अपन चौदहम स्थापना दिवसक अवसरपर ' मातृभाषा मैथिली पर संकट ओ समाधान' विषय पर संगोष्ठीक आयोजन कयल गेल। संगोष्ठी मे मैथिली भाषाक लेल संघर्ष करैवला अनेक भाषा अभियानी आओर अनेक महत्वपूर्ण साहित्यकार सभ संबोधित कयलनि। संगोष्ठीक अध्यक्षता समितिक अध्यक्ष प्रीतम कुमार निषाद कयलनि। सम्बोधित करैत मुख्य अतिथि सुरेन्द्रनाथ मिश्र कहलनि जे समिति अपन स्थापना कालहिसँ मैथिली भाषाक संरक्षण ओ समवर्धनक लेल निरंतर प्रयासरत रहल अछि। पूर्णिया अंचल पूर्णरुपसँ मैथिली भाषी अछि। पूर्णिया- कटिहार कें सीमांचल कहि क' अपमानित कयल जा रहल अछि जे एक तरहक षडयंत्र अछि। समस्तीपुर आ बेगुसरायमे सक्रिय रुपसँ मैथिली भाषाक लेल अभियान चलबैवला प्रो.प्रेम कुमार झा बजला जे अबैवला जनगणनामे सभ मैथिली भाषी मातृभाषाक कालममे सक्रियतासँ मैथिली दर्ज कराबी। सरकारक भाषा नीति हमर संख्याबल निर्भर करैत अछि। हमसब एकजुटतासँ लोकमे एहि बातक लेल जनजनजागरण करी। हमरा जनैत सम्प्रति मैथिलीपर आसन्न संकटक लेल सबसँ पैघ समाधान इएह हैत। साहित्यकार दिलीप कुमार झा संगोष्ठीकें सम्बोधित करैत कहलनि जे मैथिलीकें जड़िमे बचेबाक जरूरत छै। मैथिलीक लिखित अस्तित्वपर संकट उत्पन्न भ' गेल अछि। एहि लेल मिथिलाक सभ प्राथमिक पाठशालामे मैथिली माध्यमसँ अबिलंब पठन-पाठन होयब बहुत जरूरी अछि। जाबे धरि स्कूल सभमे मैथिलीक शिक्षा प्रारंभ नहि होयत मैथिलीकें बचेनाय मुसकिल अछि। मैथिली अकादमी पटना के पूर्व अध्यक्ष ओ प्रसिद्ध साहित्यकार डा.महेन्द्र नारायण राम कहलनि जे मैथिलीक सभसँ पैघ संकट हमरा घरे मे अछि। लोक अपन मातृभाषा कें हेय बुझैत छथि। हमरा अपन आत्मसम्मान जगाब'पड़त। हमार मातृभाषा हमर गुमान छी,शान छी। हमरा अपना मातृभाषा पर गर्व करबाक चाही। हम देश-विदेश जतय कतहुँ रही एक मैथिली भाषी दोसर मैथिली भाषीसँ अपनी मातृभाषामे बात करी। धिया-पुता संग किन्नहु दोसर भाषाक प्रयोग नहि करी। जिला परिषद सदस्या अलका झा सेहो संगोष्ठीमे अपन विचार रखलनि। ओ कहलनि मातृभाषा मैथिली कें सभ अधिकार भेटैक चाही जकर ओ अधिकारिणी अछि। हम मैथिली कें अधिकार दियेबाक लेल संघर्ष करब। अखिल भारतीय मिथिला संघ दिल्लीक अध्यक्ष विजय चन्द्र झा कहलनि जाबे धरि पाठशालामे मैथिलीक पढ़ौनी नहि हैत मैथिलीक वास्तविक अधिकार नहि भेटत। सभ संस्था मिलिक' एहि विषयपर संघर्ष करी। सुपौल सँ आयल साहित्यकार प्रो.शिवकुमार प्रसाद कहलनि जे मिथिलामे भाषाक प्रति चेतना जगेबाक जरूरत अछि जाहि लेल संस्था सभ कें आगू अयबाक चाही। युवा शोधार्थी सत्यनारायण यादव आ कृष्णकान्त मंडल कहलनि जे मातृभाषा कें बचेबाक लेल मिथिलाक युवा सभकें कें आगाँ आबय पड़तनि। आइ सम्पूर्ण भारतीय समाजपर अंग्रेजीक अधिपत्य स्थापित भ' गेल अछि। जकरा तोड़बाक बेगरता छैक। अंग्रेजीक बढ़ैत प्रभावकें मात्र मातृभाषाटा रोकि सकैत अछि। एहि लेल भारतक सभ मातृभाषा कें हर हाल मे बचेनाय आवश्यक छैक। साहित्यकार अजित आजाद कहलनि जे प्रयोगक स्तरपर साकांक्ष रहब जरूरी अछि। हिन्दी अखबार सभ मिथिलाकें बाँटि रहल अछि। लोक मैथिली पत्र-पत्रिका,पोथी कीनथि। बेसीसँ बेसी गोटे पढथि से बेसी जरूरी अछि। आगत अतिथि लोकनिक स्वागत समितिक कोषाध्यक्ष आशीष कुमार मिश्र कयलनि। समितिक सचिव पं. प्रजापति ठाकुर समितिक सालभरिक गतिविधिपर प्रकाश देलनि। संगोष्ठीमे साहित्य अकादमी युवा पुरस्कारसँ सम्मानित युवा साहित्यकार सोनू कुमार झाकें सम्मानित कयल गेलनि। धातव्य जे हुनका समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक पर साहित्य अकादमीक युवा पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि अछि। कार्यक्रम मे रेवतीरमण झा द्वारा लिखित कथा संग्रह टिकुलाक लोकार्पण आगत अतिथि द्वारा कयल गेल। संगोष्ठीक मनोज महतोक गोसाओनिक गीत गायन सँ प्रारंभ भेल। दोसर सत्रम हुनके संयोजनमे स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकरकें समर्पित सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कयल गेल। मिथिलासंघक अध्यक्ष विजयचन्द्र झा कहलनि जे मैथिलीक सब संस्था कें मिलि क' काज करबाक आवश्यकता अछि। संगोष्ठीमे प्रो.कमल मोहन चुन्नू, रागिनी मिश्र, प्रो.शुभ कुमार बर्णवाल, ज्योतिरमण झा बाबा, डा. इन्द्र मोहन झा, जीबछ ठाकुर, उदय जायसबाल, रत्नेश्वर झा, डा.इन्द्र मोहन झा, ऋषि बशिष्ठ, गणेश दास, डा.श्रीदेव लाल कर्ण, सुमन कुमार, सुमित सुमन, बी.एन.झा, दुर्गेश मंडल गोपाल झा अभिषेक, प्रभाष कुमार दमन आदि सम्बोधित कयलनि।



संगोष्ठी मे उपस्थित साहित्यकार।

10 आसान प्वाइंट मे समझू बजट के सभटा हाइलाइट

कतेक उम्मीद भेल साकार आ कतेक उम्मीद पर फिरल पानि सब किछु एक नजर मे

जँ अहां बजट वला दिन जखन वित्त मंत्री निर्मला सीतारमणसंसद मे बजटक स्पीच सुनाबैत छलिन्ह आअहां बजट कँ बढ़ियां जकां नहि बुझ पाबलिये त एहिठाम पेश अछि अहां के समझबा-बुझवा लेल बजटक सभ बारीक जानकारी। वित्त मंत्री इनकम टैक्स, महिला, नौकरीपेशा, बुजुर्ग, स्टूडेंटक अलावा स्वास्थ्य आ रोजगार सन अहम मसला पर की कहलखिन ओकरा अहां नीचा देल गेल दसटा प्वाइंटर बॉक्स स आसानी सँ समेझ सकैत छी।

इनकम टैक्स
- टैक्स फ्री इनकमक दायरा नहि बढाओल गेल
- अघोषित आय पर SET OFF खत्म करल गेल
- इनकम टैक्स रिटर्न के गड़बड़ी 2 सालक भीतर सुधारि सकैत छी

रोजगार
- 5 साल मे 60 लाख नौकरी जेनरेट होयत
- 14 सेक्टर मे शुरू भेल प्रोडक्शन प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव स्कीम बढ़त
- प्रोडक्शन लिंक्ड इनसेंटिव स्कीम सँ 30 लाख करोड़क उत्पादन के संभावना

आम आदमी
- गरीबक लेल 48000 करोड़ से 80 लाख घर बनत
- शहरी इलाका मे पीएम आवास योजनाक विस्तार कयल जायत
- 1.5 लाख डाकघर मे आब कोर बैंकिंग आ एटीएमक सुविधा

किसान
- डिजिटल सर्विस, ऑर्गेनिक फार्मिंग के बढ़ावा
- एमएसपीक 2.37 लाख करोड़ सीधा किसानक खाता मे
- 1000 LMT धान खरीदीक अनुमान

महिला के लेल खास
- मिशन शक्ति, मिशन वातसल्य, सक्षम आंगनबाड़ी आ पोषण 2.0 योजना शुरू भेल
- पॉलिश करल हीरा सस्ता भेल
- रत्न पर सीमा शुल्क घटा क 5 प्रतिशत करल गेल

की महग भेल
- 350 स बेसी कस्टम ड्यूटी रियायत खत्म भेल
- आर्टिफिशियल गहना आ हेडफोन महग भेल
- छाता पर 20 प्रतिशत इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ायल गेल

की सस्ता भेल
- कृषि उत्पाद, केमिकल, टेक्सटाइल आ मेटल
- फर्नीचर फिटिंग, पैकेजिंग बॉक्स, लेदर गारमेंट, फुटवियर पर छूट
- फोन चार्जर आ मोबाइल कैमरा लैंस पर रियायत

GST आ GDP
- इकोनोमी 9.2 फीसदीक दर स बढ़ैक अनुमान
- हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर आ वैक्सीनेशन पर फोकस
- GST कलेक्शन पहिने सँ 1 लाख 40 हजार करोड़ बेसी भेल

रेलवे
- गति शक्ति स्कीम के तहत 3 साल मे 100 कार्गो टर्मिनल
- 3 साल मे 400 न्यू जेनरेशनक वंदे भारत ट्रेन बनाओल जायत
- 2,000 किमी रेल नेटवर्क कवच तकनीक मे कवर होयत

MSME
- MSME के लेल 5 साल मे 6000 करोड़ रुपया
- उद्योग के लेल 5.54 लाख करोड़ सँ बढ़ा क 7.55 लाख करोड़क प्रावधान
- निवेशक सभक क्षमता बढ़ायल जायत, सरकार मदद करत

बिजनेस ज्ञान

जान लिय' क्रिप्टोकरेंसी पर लागे वला टैक्स के नियम, फायदा मे रहब



की अहां क्रिप्टोकरेंसी (Cryptocurrency) मे इन्वेस्ट करने छियै? दरअसल, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बजट मे क्रिप्टो स भेल मुनाफा पर 30 फीसदी टैक्स देबाक ऐलान करलखिन। एकरा लक्ष कक्ष बाजार मे चर्चा गर्म अछि। एकर अलग-अलग तरह सँ अर्थ निकालल जा रहल अछि। कन्फ्यूजन दूर करबाक लेल हमर कोशिश रहत जे अहां के क्रिप्टो पर टैक्स सँ जुड़ल हर पहलू कें समझा सकी। आउ शुरू करैत छी।

वित्त मंत्री अपन बजट भाषण मे क्रिप्टोकरेंसी शब्द केर इस्तेमाल नहि कयने छलखिन्ह। ओ वर्चुअल डिजिटल ऐसेट शब्द केर इस्तेमाल कयने छलखिन। चूंकि, क्रिप्टोकरेंसी के कोनो केंद्रीय बैंक इश्यू नहि करैत अछि तें सरकार के नजर मे ई कोनो करेंसी नहि थिक। करेंसी शब्द केर इस्तेमाल ओहि एसेट के लेलकरल जा सकैत अछि, जकरा कोनो देशक केंद्रीय बैंक इश्यू करैत अछि। एहि तरहें



बिटकॉइन सहित सभटा क्रिप्टोकरेंसी वर्चुअल डिजिटल एसेटक दायरा मे आबैत छै।

सवाल: वर्चुअल एसेट्स के ट्रांसफरआ सेल मेकी फर्क अछि?

जवाब: क्रिप्टोकरेंसीज कतेक हाथ स' गुजरैत अछि। ई शेयर, म्यूचुअल फंड्स आएहन तरहक दोसर रेगुलेटेड एसेट्सक खरीद-फरोख्त सँ अलग छै। क्रिप्टोकरेंसीज सिर्फ एक्सचेंजक जरिया खरीदलआ बेचल जा सकैत अछि। कतेक बेर दू टा लोग के बीच हुनक वॉलेट कँ जरिया क्रिप्टोक एक्सचेंज होयत अछि। ट्रांसफर एकटा व्यापक टर्म अछि। एकरा तहत एक्सचेंज सेहोअबैत अछि। अहांक लग बिटकॉइन अछि आ हमरा पास इथेरियम अछिआ हमसभ क्वाइन एक्सचेंज करैत छियै। ई टैक्स कें लिहाजे ट्रांसफर डेफिनिशन के तहत आबैत अछि। ताहि कारणे सरकार सभ तरहक ट्रांसफर कें टैक्सक दायरे मे लयबाक लेल ट्रांसफर शब्द के इस्तेमाल कयलनि अछि। दोसर तरफ क्रिप्टो क्वाइनक बिक्री मे नॉर्मल कैश अथवा करेंसी शामिल होइत अछि। बजट प्रस्ताव मेदूनू तरहक ट्रांजेक्शन पर टैक्स लगेबाक बात कहल गेल अछि।

सवाल:की हम सिर्फ अपन वॉलेट के बीच क्वाइन ट्रासफर करबे तहियो हमरा टैक्स देब' पड़ते?

जवाब: नहि, टैक्स नहि देब' पड़त। लेकिन सरकार के ट्रांसफर स' की मतलब छै एहि बारे मेबेसी स्पष्टीकरण के जरूरति अछि। चार्टर्ड अकाउंटेंट सभक मानब थिक जे-अहांक वॉलेट के बीच बेल ट्रांसफर सेल नहि थिक। ई हमर एक बैंक अकाउंट सँ दोसर बैंक अकाउंट मे भेलपैसा ट्रांसफर करबाक तरहें अछि। क्रिप्टो एक्सचेंज स' अहांक वॉलेट मेक्वाइनक ट्रांसफर पर सेहो टैक्स नहि लगबाक चाही। जँ ई अहांक इन्वेस्टमेंट अछि आ अहां वॉलेट के अकाउंटहोल्डर छियै तखने। हालांकि, एकरा थर्ड पार्टी के ट्रांसफर करबै त' टैक्स लागत।

सवाल:जँ30 फीसदी टैक्स चुकायबतखन1 फीसदी टीडीएस के की मतलब भेले?

जवाब: सरकार एहि कारणे1 फीसदी टीडीएस लगा रहल छै ताकि ओ जानि सकैत जे के-के लोकनि एनएफटी आ क्रिप्टोकरेंसी सन वर्चुअल एसेट्स बेच आ खरीद रहल छथि। क्रिप्टो एक्सचेंज पर1 फीसदी टैक्स काटल जायत आ फेर ओकरा सरकार क' देल जायत।

IPL Mega Auction 2022

सबसँ महंगा बिकल बिहारक ईशान किशन, 15.25 करोड़ मे कीनलक मुंबई

आवेश खान केँ लखनऊ 10 करोड़ मे कीनलक, रैना, पुजारा के नहि भेटल खरीदार



बेंगलुरु । बेंगलुरु मे चलि रहलछ्छ मेगा ऑक्शन मे1२३ खिलाड़ीक नीलामी भेल। एहि नीलामी मे सबसँ महग मे बिकल बांया हाथ के विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन, जकरा15.२५ करोड़ मे मुंबई खरीदलक। अनकैप्ड प्लेयर्स पर सेहो जम क धन वर्षा भेल। ऑलराउंडर शाहरुख खान आ राहुल तेवतिया केँ9-9 करोड़ मे खरीदल गेल। हिनक बेस प्राइस महज 40 लाख छल।10टा खिलाड़ी कें 10 करोड़ स ज्यादाक कीमत पर खरीदल गेल। एहि मे7टा भारतीय खिलाड़ी शामिल अछि।एहि लिस्ट मे पहिल अनकैप्ड खिलाड़ी अछि आवेश खान, जकरा10 करोड़ मे लखनऊ खरीदलक।

आईपीएल 2022 मेगा ऑक्शनक किछु खास चौंकाबय वला बात

ऑक्शन के दोसर दिन दिग्गज लेल खराब रहल

आईपीएल 2022 केर मेगा ऑक्शनकदोसर दिन इंग्लैंड के ऑलराउंडर लियाम लिविंगस्टन 10 करोड़ सँ बेसी रकम मे बिकै वला पहिल खिलाड़ी बनल। ओकरा खरीदबाक लेल पंजाब आ हैदराबाद मे जबरदस्त भिड़ंत भेल। आक्शन के दोसर कतेक दिग्गज खिलाड़ी के लेल ठीक नहि रहल। ऑस्ट्रेलिया के टी-20 वर्ल्ड कप दिलाबै आ जीताबे वला एरोन फिंच, इंग्लैंड के वनडे आ टी-20 टीम के कप्तान ओएन मॉर्गन केँ कोनो खरीदार नहि भेटल। चेतेश्वर पुजारा कें सेहो कियो नहि कीनलक।

ईशान अपन गुरु धोनी के पछाड़ि देलक

ईशान आईपीएल इतिहास मे दोसर सबसँ महग बिकै वला भारतीय खिलाड़ी बनि गेल अछि। एहि सँ पहिने युवराज सिंह कें 16 करोड़ मे दिल्ली कैपिटल्स खरीदने छल। ईशान एहि मामला मे अपने गुरु महेंद्र सिंह धोनी के सेहो पछाड़ि देलक, जकरा चेन्नई 12 करोड़ में रिटेन कयने अछि।

नीलामी के दौरान भेल दिलचस्प लड़ाई

किछु खिलाड़ी लेल फ्रेंचाइजीमे नीलामी के लेल नमहर लड़ाई चलल। एहि मे ईशान किशन (10 मिनट), निकोलस पूरन (8 मिनट), शाहरुख खान (8 मिनट) आ तेवतिया (8 मिनट) शामिल छल।

अनकैप्ड पर सेहो भेल धन वर्षा

अनकैप्ड प्लेयर्स मेसबसँ महग बिकल आवेश खान, जकर बेस प्राइस 20 लाख छल।40 लाख बेस प्राइस वला शाहरुख आ तेवतिया 9-9 करोड़ मे बिकलाह। राहुल त्रिपाठी कें8.50 करोड़ आ20 लाख बेस प्राइस वला अनुज रावत 3.40 करोड़ मे बिकलाह।

नहि बिकल रैना आ शाकिब

पूर्व बांग्लादेशी कप्तान शाकिब अल हसन सेहो पहिल राउंड मे अनसोल्ड रहल। हुनक बेस प्राइस 2 करोड़ रुपया छल। मिस्टर कछ्छ के नाम सँ मशहूर सुरेश रैना सेहो नहि बिक सकलाह। राजस्थान रॉयल्स टीमक कप्तानी क चुकल स्टीव स्मिथ सेहो अनसोल्ड रहलाह। हुनक बेस प्राइस सेहो2 करोड़ रुपयाछल।

पहिल10 करोड़ी विदेशी बनल हसरंगा

हसरंगा लेग स्पिनर होयबाक संग-संग पावर हिटर सेहो अछि।दू टा रेयर स्किल सेटक कॉम्बिनेशन। ओकरा10.75 करोड़ में आरसीबी खरीदलक। एहने कॉम्बिनेशन तेवतिया के पास सेहो अछि, ओकरा सेहो ऊंच कीमत पर खरीदल गेल।

पांडेजीक वैल्यू घटि गेल

सनराइजर्स हैदराबाद के मजबूत बल्लेबाज मनीष पांडेक वैल्यू एहि नीलामी मे घटिगेल। ओकरा लखनऊ 4.6 करोड़ रुपया मे खरीदलक। कारण ई रहल जे हुनका पर सेल्फ गेम खेलबाक आरोप लागि चुकल अछि। हैदराबाद मे मनीषक सैलरी 11 करोड़ छल। ओकर वैल्यू में 58% केर कमी आयल अछि।

बड्ड ग्लैमरस अछि ग्लेन मैक्सवेलक भारतीय मंगेतर विनी रमन



ऑस्ट्रेलियाक विस्फोटक बल्लेबाज ग्लेन मैक्सवेल भारतीय मूलक विनी रमन सँ सगाई कयलनि अछि। दुनू गोटे इंस्टाग्राम पर फोटो शेयर सगाईक खुशखबरी सुनौने छल। मैक्सवेल आ विनीक स्टोरी खूब दिलचस्प अछि। जल्दिये दुनू परानी शादी सेहो करताह। दुनू गोटे अक्सर साथ महक अपन अंतरंग फोटोज सोशल मीडिया पर शेयर करैत रहैत छथि। विनी सोशल मीडिया पर खूब एक्टिव रहैत छथिन। विनी मैक्सवेल संग2017सँ रिलेशनशिप मे रहैत छथिन।

विनी ऑस्ट्रेलिया स्थित एकटा तमिल परिवार सँ ताल्लुक राखैत छथिन। ओ विक्टोरिया के मेनटोन गर्ल्स सेकेंडरी कॉलेज सँ मेडिकल साइंस के पढ़ाई करने छथिन।

ओ एहि क्षेत्र मे प्रैक्टिस सेहो क रहल छथिन। विनी रमन मेलबर्न मे स्थित एकटा भारतीय फार्मासिस्टक काज सेहो करैत छथिन। 14 मार्च, 2020के एकटा इंस्टाग्राम पोस्ट मे विनी अपन पारंपरिक भारतीय शैलीक सगाईक एकटा तस्वीर शेयर करने छलिन। कैमराक सोंझा पोज दैतदुनू जोड़ा पन्ना हरा रंगक एथनिक भारतीय परिधान पहिरने छलाह। पोस्टक कैप्शन मे विनी लिखने छलिनजे ओ अपन भारतीय सगाईक जश्न मनौलनि आ ओ ग्लेन केँ एक छोट सन टीजर सेहो देने रहथिन की शादी केना होयत। मैक्सवेल जखन-जखन कत घूमे लेल जायत छथि तँ विनी ओकरा संग जरूर रहैत छथिन। दुनू अक्सर एक-दूसराक संगवला रोमांटिक तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर करैत रहथि छथि। मैक्सवेल आ विनी दुनू अपन रिश्ता के कहियो नहि छिपा क राखलखिन, बल्कि दुनू एक-दोसरा कें प्रति अपन प्यार के जाहिर करबाक कोनो मौका नहि छौड़ैत छथिन

खतरा मे आबि गेल विराट कोहलीक नंबर 3 पोजीशन!

ई धाकड़ खिलाड़ी छीन लैत टीम इंडिया स जगह ?

नई दिल्ली । भारतीय टीम वेस्टइंडीज के खिलाफ वन डे सीरीजक तेसर मुकाबला खेल रहल अछि। एहि मैच मे भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली एक बेर फेर सँ फेल भ' गेल छथि। विराट कोहली के हाथ सँ जहिया स' कप्तानी गेल अछि ओकर बल्ला सँ रन नहि निकलि रहल अछि। ओ लगातर क्रीज पर रन बनावे लेल जुझि रहल छथि मुदा सफलता नहि भेटि रहल छै। कोनो टाइम मे टीम इंडियाक रन मशीन के रुप मे विख्यात विराट कोहली बहुते खराब फॉर्म स' गुजर रहल छथि। साउथ अफ्रीका दौराक बाद हुनक खराब फॉर्म वेस्टइंडीज सीरीज मे सेहो हिनक पीछा नहि छोड़ि रहल अछि। वेस्टइंडीज के खिलाफ पहिल मैच मे ओ 8 रन बना क' आउट भ' गेल छलाह। ओहिठाम दोसर वनडे मैच मे सिर्फ 18 रन। तेसर वनडे मैच मे भारतीय फैंस केँ हुनका सँ पैघ इनिंग के उम्मीद छल, मुदा ओ अपन खाता धरि नहि खोलि सकलाह।

ई खिलाड़ी ल' सकैत अछि जगह

विराट कोहली पिछला दू साल सँ शतक नहि लगा पाबि रहल छथि। हर बेर मैदान पर ओ अपन फैंस के निराश क' दैत छथिन। ऐना मे टीम इंडिया हुनक जगह लेबाक लेल एकटा धाकड़ बल्लेबाज मौजूद अछि। ओ खिलाड़ी छथि उपकप्तान केएल राहुल। राहुल बहुते क्लासिक बल्लेबाज छथि। हुनक तरकश मे ओ सभटा तीर अछि जे विपक्षी टीम के धराशाही क' सकैत अछि। ओ भारत के तरफ सँ तीनु फॉर्मेट मे शतक लगा चुकल छथिन। केएल राहुलक अखनि धरि भारतीय टीम मे बैटिंग ऑर्डर पक्का नहि भ' सकल अछि। कखनहुँ ओ ओपनिंग त' कखनहुँ मिडिल ऑर्डर मे उतरैत छथि। ऐना मे टीम मैनेजमेंट विराट कोहलीक जगह हुनका नंबर तीन पर उतार सकैत छै।



आईपीएल मे सेहो राहुल देखेने छथि अपन दम

केएल राहुल भारतीय टीम के लेल तीनू फॉर्मेट मे रन बनौने छथि। पिछला कुछ साल मे ओ भारतीय टीम के लेल सबसँ पैघ मैच विनर बनि क' उभरल छथि। आईपीएल मे ओ खूब रन कूटने छथि। पिछला कतेक सीजन मे ओ पंजाब किंग्स के लेल हर बेर 500 स ज्यादा रन बनौने छथि। केएल राहुलक धमाकेदार बल्लेबाजीक सभ दीवाना अछि। अखनि हुनका लखनऊ टीम 17 करोड़ रुपये मे खरीदने छल आ कप्तान बना क' राखने छथि। ऐना मे ओ विराट कोहली केर जगह लेबा लेल सबसँ पैघ दावेदार छथि।

अल्लू अर्जुनक 'पुष्पा' तोड़लक सभटा रिकॉर्ड, बॉक्स ऑफिस पर भेल 300 करोड़क कमाई

फिल्मक गीत श्रीवल्लीक लाखो लोग भेल दीवाना, सेलेब्रिटी स ल आम फैंसक रील्स बनल ई गाना

मुंबई। अल्लू अर्जुनक फिल्म'पुष्पा द राइज'बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ कमाई क रहल अछि। तेलुगु के अलावा हिन्दी भाषा में रिलीज भेल फिल्म'पुष्पा द राइज' के बंपर कमाई लगातार अखनिहुँ जारी अछि। फिल्मक मेकर्स हाले मे एहि फिल्मक सक्सेस पार्टी राखने छलाह जाहि मे ओ कहने छलाह जे फिल्म ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर 300 करोड़ कमा लेत आ से सच भ गेल। अल्लू अर्जुनक 'पुष्पा' बॉक्स ऑफिस पर 300 करोड़ कमा लने अछि।

'पुष्पाः द राइज' फिल्म के निर्देशन सुकमार कयने अछि।निर्देशक सुकुमार हाले मे एहि फिल्म के सक्सेस केँ सेलिब्रेट करय लेल एकटा पार्टी सेहो राखने छलाह जाहि मे ओ घोषणा कयने छलाह जे फिल्म 'पुष्पा' बॉक्स ऑफिस पर अखनि धरि 300करोड़ के कमाई क चुकल अछि। बता दी की 'पुष्पा' फिल्म दु पार्ट मे बनत। पहिल पार्ट यानी 'पुष्पाः द राइज' 17 दिसंबर क रिलीज भेल छल ओहिठाम दोसर यानी 'पुष्पाः द रूल-पार्ट 2' केर शूटिंग एहि साल शुरू होयत।

फिल्मक गाना 'श्रीवल्ली' सोशल मीडिया पर तोड़लक सभटा रिकॉर्ड

'पुष्पा द राइज' फिल्मक गाना ' श्रीवल्ली ' सबसँ बेसी पॉपुलर भेल। की सेलिब्रिटी आ की आम लोग, सभ केँ अपन गिरफ्त मे क लेलक फिल्मक गाना श्रीवल्ली। क्रिकेटर डेविड वार्नर, सुरेश रैना, बिग बॉस स्टार राहुल वैध समेत कतेक रास टीवी स्टार एहि गाना पर अपन रील बना इंस्टाग्राम आ फेसबुक पर पोस्ट करला। एहि गाना पर कतेको मीम सेहो बनल।

ई थिक 'पुष्पा द राइज'क कहानी

'पुष्पा : द राइज'क सुपर सक्सेस के बाद साउथ के संग-संग बॉलीवुड के सेहो अल्लू अर्जुन पर नजरि टिक गेल अछि। फिल्म के डायरेक्टर सुकुमार सेहो अल्लू अर्जुन के तारीफ मीडियाक समक्ष कतेक बेर क चुकैल छथि आ ओ कहलनि जे अल्लू ओकरा लेल भगवान जकां अछि। सुकुमार कहलनि जे ओ जेना सभटा इमोशन के फिल्म मे बारीकी सँ प्रेजेंट करैत अछि ओ अभूतपूर्व अछि। सुकुमार के कहब अछि जे भविष्य मे सेहो ओ अल्लूक संग आउर फिल्म सभक निर्देशन करत। बता दी की फिल्म 'पुष्पा' लाल चंदन के स्मगलिंगक कहानी बतबैक अछि। फिल्म में अल्लू अर्जुन पुष्पा नाम के किरादार निभौने छथि जे एकटा लॉरी ड्राइवर अछि आ ओ लाल चंदनक तस्करी करैत अछि।


न्यू कैशल फुटबॉल क्लब केर मॉडल रिबेका गॉर्मले वेलेंटाइन डे केर मौका पर खास लाल बिकनी मे कहर ढा रहल छथिन।

कियैक नहि प्रशस्त भ' रहल अछि मैथिली मे कमर्शियल सिनेमाक लेल बाट

बिहारक सभ जिला मे जखन खुजत मल्टीप्लेक्स तखन मैथिली सिनेमाक भाग जागत

जितेन्द्र नाथ जीतू

मैथिली फिल्म बनेनिहार निमार्ता आ निर्देशक कें एक टा बात अबस्से बुझबाक चाही जे तीस लाख टका में कमर्शियल सिनेमा नहि बनाओल जा सकैत अछि। तीस लाख टका मे कंटेंट वला फिल्म बनि सकैत अछि नहि की नाच- गान वला सिनेमा। एहि चक्कर में नहि प्रयोगधर्मी आ कंटेंट आधारित फिल्म बनैत अछि आ नहि कमर्शियल। निमार्ता के पास पाई कम रहैत अछि आ लोक सब हुनका सलाह देताह जे लगायल पैसाक रिकवरी चाही त' नाच- गाना वाला सिनेमा बनाबू। कोहुना जोड़ि-तोड़ि के सिनेमा बनि क' हाल मे लगैत अछि।



कोविड सँ पहिने बिहारक कतेक जिला मे सिनेमाक हॉल सब बंद छल। जिला मधुबनी मे सभटा सिनेमा हॉल बंद भ' चुकल अछि। मल्टीप्लैक्स नहि हेबाक कारणे हिन्दी सिनेमा पटना छोड़ि बहुत कम जिला मे लगैत अछि। कोविड एला सं पहिने बिहारक हॉल सँ बाक्स आफिसक रिपोर्टक अनुसार मात्र 2 पर्सेंट कमाई भेल छल। तहन हॉल चलेबाक कारण ओकर सभक मजबूरी कहल जाय जे ओ सब भोजपुरी सिनेमा लगबैत अछि। टिकट रेट सस्ता छै जाहि कारणे कमाई बेसी नहि होई छै। एहने हाल रहल त' धीरे- धीरे सभटा सिंगल स्क्रीन बंद भह्व जायत आ तकर बाद कम सं कम हरेक जिला मे एक टा मल्टीप्लेक्स जरुर बनत जेना दरभंगा में एक टा सिंगल स्क्रीन के ऊपर छोट-छीन महानगरक तर्ज पर स्क्रीन बनायल गेल अछि। भह्व सकैतअछि तकर बाद पाई बला सब के नींद खुलनि। ओना अखनो कतेक हॉल अछि जतय सिनेमा लगायल जा सकैत अछि। एक टा बातक सदिखन हल्ला होइत अछि जे मैथिली सिनेमा में कमाई नै छै। 'सस्ता जिनगी महग सिनुर' जखन बनल रहै तखन एतेक कमाई के साधन कहां रहै कि ओ सिनेमा कम पाई कमेलक।





पाई बला मैथिल सब कें इ बुझबाक चाही जे जेना ओ बिजनेस के नव तरीका सँ अकूत पाई कमा रहल छथि तहिना अखुनका डिजीटल युग के समय मे सिनेमा माध्यम सँ पाई कमेबाक बहुत रास स्त्रोत सब खुलिगेल अछि। ओटीटीक समय में आइ काल्हि कतेक प्लेटफार्म सिनेमा खरीदैतअछि मुदा सिनेमा नीक हेबाक चाही। सेटेलाईट के कतेक प्रकार छै। डीडी बिहार सं मैथिली सिनेमा टेलीकास्ट होइत अछि। मैथिली सिनेमा केँ अभावक कारणे देखाओलसिनेमा के बेर बेर टेलीकास्ट करैत अछि आ जतेक बेर देखबैत अछि ततेक बेर पाई निमार्ता के भेटैत छनि। मानि लिय करोड़ टका द' क' कमर्शियल मैथिली सिनेमाक निर्माण होइत अछि। ओकरा मैथिली में रीलिज भेलाक बाद भोजपुरी में डब क' दियौ। हिन्दी में डब क' हिन्दी सेटेलाईट के बेचल जा सकैत अछि। मुदा नीक क्वालिटीभेलाक बादे कोनो सेटेलाईट चैनल एक टा ठीक ठाक रेस्पेकटेड एमाउंट देत।